FaithLife Ministries
Equipping Church Leaders Globally"

कलीसिया के अगुवों के लिए

प्रबन्धकदल

प्रशिक्षण पुस्तिका

खंड 1

''परमेश्वर ने जिस सेवकाई के लिए बुलाया है

उसके प्रबन्ध करने के लिए कलीसिया के अगुवे को सहायता करना।''

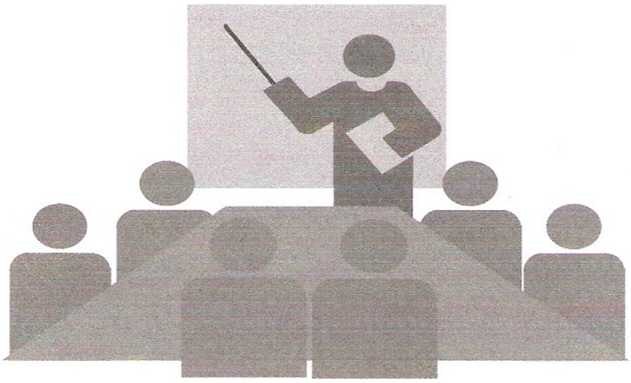

© 2010, 2006, 2002 by Barry Voss
FaithLife Ministries, Inc.
www.faithlifeministries.net
Phone: (770) 619-9939
Email: BarryVoss@comcast.net

परिचय।

पासबान, कलीसिया के कर्मचारी और सेवकाई के अगुवों को जिस प्रकार की सेवकाई के लिए बुलाया गया है उनका प्रबन्धकदल तथा प्रशासन के लिए सहायता करने के उपलक्ष में इस प्रशिक्षण पुस्तिका का विकास किया गया है। जब अधिकतर सेमिनारी तथा बाइबल कॉलेज प्रचार करने, शिक्षा देने और सुसमाचार फैलाव के लिए पासबान तथा सेवकाई के अगुवों को तैयार करते हैं, परन्तु उनके पाठयक्रम में प्रबन्धकदल के बुनियादी कला के बारे में कोई भी प्रशिक्षण सामग्री शामिल नहीं होती है। लोगों की अगुवाई करना, साधनों का प्रबन्ध करना, तथा अपनी कलीसियाओं का प्रशासन करना अधिकतर पासबान तथा अगुवों का कार्य होने के कारण जिस प्रकार की सेवकाई के लिए उन्हें बुलाया गया है उसमें उन्हें तैयार करने के लिए इस प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

यह लेखक सन् 1996 से सेवकाई के क्षत्र में कलीलसिया तथा सेवकाई के अगुवों का प्रशिक्षण कर रहे हैं। विभिन्न देशों के पासबानों के साथ कार्य करने के द्वारा और प्रबन्धकदल प्रशिक्षण की सामग्री तथा साधनों की कमी की वजह से इस पुस्तिका का विकास हुआ है। और यह बात भी सत्य है कि इस सामग्री की अधिकतर बातें उपलब्ध नहीं है और वर्तमान समय में सिखाई भी नहीं जाती हैं। अविकसित देशों में अधिकर पासबान तथा अगुवे बुनियादी प्रबन्धकदल प्रशिक्षण को हासिल नहीं कर पाते हैं इसलिए फेथ लाइफ मिनिस्ट्रीस ने इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए इस सामग्री को विकसित किया है।

मसीही तथा बाइबलीय दृष्टिकोण से बुनियादी स्तर की समझ तथा प्रबन्धकदल का औज़ार और विधि का प्रशिक्षण देने हेतु इस प्रशिक्षण पुस्तिका की बातों को तैयार किया गया है। हम विश्वास करते हैं कि इन औज़ार और विधि को पवित्रात्मा के मार्गनिर्देशन, और निर्भरता पर प्रयोग किया जाए तो ''परमेश्वर के राज्य के लिए फल'' उत्पन्न किया जाएगा (कुलु. 1:10)।

सारे अधिकार आरक्षित हैं। अमेरिका में प्रंचलित नकल अधिकार के अलावा लेखक से लिखित अनुमति के बिना इस लेख का किसी भी प्रकार की नकल नहीं कर सकते हैं चाहे वह आण्विक हो, यन्त्र–रचना हो, या फिर आलेख ही क्यों न हो। स्थाई जगह में असली तरीके से इसकी नकल करने में छूट दी जाती है तथा वैसा करने के लिए उत्साहित किया जाता है।

फेथ लाइफ मिनिस्ट्रीस के बारे में

विश्वभर की कलीसिया के अगुवों को सेवकाई के लिए प्रशिक्षण और साधन की उपलक्षता में सन् 2001 में बारी वोस और किम स्टार–वॉस के द्वारा फेथ लाइफ मिनिस्ट्रीस का आरम्भ हुआ। परमेश्वर के लोगों को सेवकाई के लिए तैयार करने, प्रशिक्षण देने और अनुशासित करने की बुलाहट और जोश उनमें हैं, विशेषरूप से ऐसे स्थानों के लिए जहाँ अर्थ और साधन कम पाए जाते हैं। वे विभिन्न देशों में पासबानों को और बच्चों, नवजवानों और वयस्कों के बीच में सेवा करनेवालों को प्रशिक्षित करते आ रहे हैं, सेवकाई की नेतृत्व कौशलता को विकसित करने पर विशेष ज़ोर देते हैं। प्रशिक्षण सत्र और सम्मेलन को आयोजित करने के अलावा वे विश्वास का एक जीवन व्यतीत करने हेतु विश्वासियों को प्रोत्साहित करने के लिए उनको अपने प्रशिक्षण की सामग्री को बनाते तथा विकसित करते हैं।

किम पहले जीए का अल्फरेटा की क्रैस्ट द शपेर्ड चर्च में बच्चों की शिष्यता सेविका थीं जहाँ उन्होंने 500 से अधिक बच्चों और वयस्कों के बीच में सेवकाई की। उनकी सेवकाई की भूमिका के अलावा उनकी पिछले 15 वर्षों से विभिन्न बड़ी–बड़ी कम्पनियों में कम्पूयटर तन्त्र और परियाजनओं के लिए प्रबन्धक के रूप में कार्यभार सम्भाला है। वर्तमान समय में बारी इस सेवकाई में पूरा समय लगाता है और इनके पास भी व्यवसाय प्रबन्धन के 20 वर्ष का अनुभव है। उनकी कलीसिया में उन्होंने आराधना तथा पुरुषों के बीच के सेवकाई के पदभार सम्भाला है। बारी और किम पिछले 35 वर्षों से विवाहित है और उनके दो वयस्क बच्चे भी हैं।

अभार

सर्वप्रथम इस परियोजना को सम्भव और इस पुस्तिका के विकास के लिए दर्शन दिए हुए परमेश्वर के प्रति हम अपना आभार व्यक्त करना चाहते हैं। तथा केन जाक्यॉस, डारेल हो, डोमिंग ओरप्रेशिओ, अय्यूब खायॉ, और डेविड क्यूस्पिरोका को धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने सम्पादन और सामग्री निवेश में हमारी सहायता की।

कलीसिया के अगुवों के लिए प्रबन्धकदल

खंड 1

विषय सूची

भाग 1 : सेवकाई के प्रबन्धकदल

अध्याय 1 सेवकाई के नेतृत्व

अध्याय 2 एक बाइबलीय अगुवा होना

अध्याय 3 नेतृत्व शैली

अध्याय 4 अगुवों को विकसित करना

भाग 2: लोगों का प्रबन्धकदल

अध्याय 5 आत्मिक वरदान

अध्याय 6 लोगों का प्रबन्धकदल

अध्याय 7 संघर्ष का प्रबन्धकदल

अध्याय 8 शिष्य बनाना

भाग 3 : साधन का प्रबन्धकदल

अध्याय 9 नीतियुक्त योजना

अध्याय 10 धन का प्रबन्धकदल

अध्याय 11 समय का प्रबन्धकदल

अध्याय 12 सूचना का प्रबन्धकदल

भाग 1

<u>सेवकाई का प्रबन्धकदल</u>

अध्याय 1

सेवकाई का नेतृत्व

"परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में हैं रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच–कमाई के लिये नहीं, पर मन लगा कर। और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, बरन झुंड के लिये आदर्श बनो। और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने को नहीं।"

1पतरस 5:2–4

कलीसिया के हर एक अगुवे में नेतृत्व का मज़बूत हुनर होना अनिवार्य है। इसके बिना कई कलीसिया के अगुवों को सेवकाई को आगे बढ़ाने तथा लोगों को कलीसिया की सेवकाई में तत्पर बनाने में कठिनाई हुई। नेतृत्व को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि एक व्यक्ति के भीतर, एक वांछनीय लक्ष्यप्राप्ति के लिए दूसरों को प्रेरणा देने योग्य, हुनर। परन्तु नेतृत्व में दर्शन और योजना और लोगों को विकसित करना लक्ष्य प्राप्ति के लिए डटे रहना शामिल है। इस अध्याय में हम प्रभावशाली सेवकाई के नेतृत्व की 5 कुंजियाँ देखेंगे।

प्रश्न : एक अगुवे को कौन–सी बात अगुवा बनाती है?

उत्तर : अनुयायी गण!

- ❖ यदि आपके पीछे कोई भी नहीं हो लेता है तो आप एक अगुवे नहीं है।

प्रभावशाली सेवकाई के नेतृत्व के 5 कुंजियाँ

सं 1. अगुवा प्रभावित करता है न कि अधिकार का प्रयोग

यूहन्ना. 10:2–4

"परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है। उसके लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है। और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उन के आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं।"

- नेतृत्व प्रभाव है
  1. आप को चाहिए कि कार्य के लिए दूसरों को प्रेरणा दें।
  2. भरोसे तथा आदर के द्वारा आप प्रभाव कमाते हैं।
  3. नेतृत्व ऐसी एक काबिलियत है जिस वजह से लोग आप के निर्णयों को अपनी मर्ज़ी से पालन करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

- अधिकार शक्ति है

    1. शब्दकोश के अनुसार अधिकार है :

       ''प्रभावित करने की शक्ति या आदेशात्मक विचार, मत या आचरण''

    2. यह परमेश्वर की ओर से आप को दिए गए हैं

       ''क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर स न हो'' – रोमि. 13:1

    3. अधिकार भूतकाल से प्राप्त किया जाता है, न कि वर्तमान से

    4. आपके निर्णय को लागू करने की क्षमता को अधिकार कहा जाता है

- हमें अपना अधिकार किस प्रकार प्रयोग करना है?

    - सिखाने के लिए

      ''पर तू ऐसी बातें कहा कर, जो खरे उपदेश के योग्य हैं।पूरे अधिकार के साथ ये बातें कह और समझा और सिखाता रह:'' – तीतुस. 2:1,15

    - सेवा करने के लिए

      ''कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में हैं रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच–कमाई के लिये नहीं, पर मन लगाकर'' – 1पत. 5:2

अपके अधिकार के साथ अगुवाई करने से प्रभाव के साथ अगुवाई करना हमेशा अच्छा रहता है

- जब आप अपने प्रभाव को उपयोग में लाते हैं तब लोग आपके पीछे हो लेना चाहते हैं

- जब आप अपने अधिकार का उपयोग करते हैं तब लोग पीछे हो लेने को मज़बूर हो जाते हैं

    - आप आपकी सेवकाई से अक्सर लोगों को खोएंगे

    - आप विरोध को पैदा करते हैं

संख्या 2 अगुवों के पास दर्शन है

नीति. 29:18 – *''जहां दर्शन की बात नहीं होती, वहां लोग निरंकुश हो जाते हैं।''*

1. एक अगुवे को मालूम है उसे कहाँ जाना है

2. दर्शन के बिना कलीसिया के पास अभिदिशा नहीं होता है

    - दर्शन ध्यान को मुहैया कराता है

    - यह कलीसिया के उद्येश्य तथा लक्ष्य को स्पष्ट करता है।

3. सेवकाई के लक्ष्य और उद्येश्य को एक दर्शन परिमाणित करता है।

    - इसका निर्णायक उद्येश्य, यह क्या पूरा करना चाहता है

- यह क्या चाहता है या यह कहाँ जाना चाहता है
    - दर्शन के उदाहरण
        1. 12 महीने के भीतर एक नई कलीसिया के इमारत का निर्माण।
        2. समाज के गरीब लोगों के लिए एक भोजन भण्डार की व्यवस्था करना।
        3. समाज में एक क्रिस्तीयन स्कूल आरम्भ करना।
        4. 10,000 लोगों को सुसमाचार पहुँचाना।

4.कलीसिया के प्रति परमेश्वर के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक दर्शन उन्हें सक्षम बनाता है।

- परमेश्वर की ओर से मिला हुआ दर्शन अपने बलबूते पर पूरा करने वाला कोई काम नहीं है। यूह. 15:5 – *"परमेश्वर से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"*
- कलीसिया के लिए परमेश्वर के नेतृत्व को खोजना अनिवार्य है। मत्ती. 19:26 – *"मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।"*

5.कलीसिया के प्रति दर्शन ने उसे तैयार करता तथा क्रियाशील बनाता है।

- जब सदस्य दर्शन को बाँटते है तब अधिकर उस काम के लिए जुड़ जाते हैं।
- सदस्यों को आगे के कार्य के लिए कुछ बातों को प्रदान करता है।
- दर्शन लोगों को यह एहसास दिलाता है कि वे किसी बड़े कार्य का एक हिसा हैं।

टिप्पणी : एक दर्शन मिशन कथन नहीं है।

- मिशन कथन आपको क्या करना चाहिए इसका मार्गदर्शन देता है न कि आप कहाँ की ओर जा रहे हो।

<u>दर्शन का कैसे विकसित किया जाए</u>

कदम 1 परमेश्वर की अगुवाई और प्रकाशन के लिए प्रार्थना करें

- अपने समाज या संसार में परमेश्वर आपको किस प्रकार उपयोग करना चाहते हैं इस विषय के लिए परमेश्वर से माँगें।
- परमेश्वर क्या चाहते हैं कि आप उनके लिए करें।

कदम 2 बड़ा सोचें

- आपके पास जो है उसमें स्वयं को सीमित न रखें।
- आप की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परमेश्वर को अनुमति दें।

कदम 3 इसके विकास में दूसरे अगुवों को भी शामिल करें।

कदम 4 दर्शन को लिखें और वैकल्पिक बातों या विकल्पों को ध्यान में रखें

- उनके बारे में सोचने तथा प्रार्थना करने का समय निकालें।
- उस बातों में कुछ ओर बातों को निवेश करने के लिए दूसरों से कहें।

कदम 5 परमेश्वर जिस दर्शन के लिए आप को बुला रहे हैं उसके प्रति प्रार्थना करें और उसका चुनाव करें!

कदम 6 दर्शन को संचारित करें।

- अगुवों को चाहिए कि अवगत और शामिल कराने के लिए दर्शन को अक्सर संचारित करें।
- एक अगुवे होने के नाते आपको दर्शन की प्रति वचनबद्ध रहना चाहिए।

संख्या 3. <u>अगुवों के पास पद्धति है</u>

नीति. 16:3

"अपने कामों को यहोवा पर डाल दे, इस से तेरी कल्पनाएं सिद्ध होंगी।"

क. दर्शन की सफलता के लिए अगुवा पद्धति बनाता है।

- बिना पद्धति के आप दर्शन में सफल नहीं होंगे।
- पद्धति आप को दर्शन की ओर संसाधनों तथा कार्यों को संगठित करने में सहायता करती है।
- एक अगुवा दर्शन के बिना पद्धति नहीं बना सकता है।

ख. परमेश्वर के दर्शन के लिए एक अगुवा परमेश्वर के संसाधनों का प्रबन्ध करता है।

- उपयोग करने के लिए अगुवे के पास परमेश्वर संसाधन देते हैं।
- परमेश्वर अगुवे से यह कामना करते हैं कि वह इस संसाधन को बुद्धिमानी से उपयोग करें।
- परमेश्वर अपनी लागत का प्रतिफल चाहते हैं।

ग. एक अगुवे का काम है कि कार्यों की पद्धति बनाना और पद्धति को क्रियाशील बनाना।

- अगुवे को चाहिए कि अपनी पद्धति को लगातार आधुनिक बनाता रहें।
- एक अच्छी पद्धति अगुवे को बेहतर निर्णय लेने में सहायता करती है।
- एक अच्छी पद्धति परमेश्वर के संसाधनों को बर्बाद करने से बचाती है।

संख्या 4. <u>अगुवे लोगों को विकसित करते हैं</u>

लूका. 9:1–2

''फिर उस ने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्माओं और बिमारियों को दूर करने की सामर्थ और अधिकार दिया। और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने, और बिमारों को अच्छा करने के लिये भेजा।''

क. अगुवा प्रथम और महत्वपूर्णशिष्यों को बनाता है (मत्ती. 28:19–20)

- वचन की प्रचार करें और शिक्षा दें।
- आज्ञा मानना सिखाएं।

ख. अगुवा दूसरों को सेवकाई के लिए प्रशिक्षित तथा तैयार करता है।

- प्रत्येक के आत्मिक वरदानों के बारे में जानता तथा उनका उपयोग करता है।
- सेवकाई में सहकारिता को प्रोत्साहित करता है।

ग. अगुवा अन्य अगुवों को शामिल करता तथा विकसित करता है

- उनकी सेवकाई को बढ़ाने
- सेवकाई को कायम रखने
- जितना अधिक अगुवे होंगे, उतना अधिक सफलता की सम्भावना है।

संख्या 5. <u>अगुवे उपलब्धि पर ध्यान देते हैं</u>

रोमि. 14:12

''सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।''

क. अगुवों का ध्यान लक्ष्य प्राप्ति और फल लाने में है

- एक अगुवा हमेशा दर्शन को अपने हृदय में रख छोड़ता है।
- लाए हुए फल के अनुसार हमेशा एक अगुवा अपनी सफलता को तौलता है।

ख. अगुवा अपनी लागत के लिए अधिक प्रतिफल मिलनेवाली जगह पर ध्यान केन्द्रित करता है।

- जहाँ अधिक सफलता मिलती है वहाँ की ओर अगुवा संसाधनों को मोडता है।
- एक अगुवा निष्फल सेवकाईयों को छोड़ देता है।

ग. अगुवा जानता है कि कार्यविधि उपलब्धि नहीं है।

- एक अगुवा सेवकाई के प्रभाव के अनुसार उसे तौलता है
- एक अगुवा कार्यविधियों के द्वारा दर्शन में होनेवाले परिणाम का मूल्याकंन करता है।

लूका. 10:38–42

''फिर जब वे जा रहे थे, तो वह एक गांव में गए, और मार्था नाम एक स्त्री ने उसे अपने घर में उतारा। और मरियम नाम उस की एक बहिन थी; वह प्रभु के पांवों के पास बैठकर उसका वचन सुनती थी। पर मार्था सेवा करते करते घबरा गई और उसके पास आकर कहने लगी; हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी सोच नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिये अकेली ही छोड़ दिया है? सो उस से कह, कि मेरी सहायता करे। प्रभु ने उसे उत्तर दिया, मार्था, हे मार्था; तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है। परन्तु एक बात अवश्य है, और उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है: जो उस से छीना न जाएगा।''

दर्शन और मिशन

1. एक मिशन कथन को लिखें (परमेश्वर के लिए कौन–सा कार्य करने के लिए वह आप को बुला रहे हैं?)

....
....
....
....
....
....
....
....
....

2. एक दर्शन कथन लिखें (सेवकाई का कौन–से लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर आप से कह रहे हैं?)

....
....
....
....
....
....
....
....
....

दर्शन कथन में ऐसी एक बात होनी चाहिए जिसके द्वारा हम उसकी समाप्ति को तौल सकें।

अध्याय 2

<u>एक बाइबलीय अगुवा होना</u>

"मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाई फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं। यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा। मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।"

यूह. 15:5–8

दूसरों की अगुवाई करते समय एक अगुवे से की जानेवाली आकांक्षा है कि वह बाइबलीय सिद्धान्तों का पालन करे क्योंकि यह सबसे महत्वपूर्ण बात है और इसी बात को सिखाने के लिए यीशु मसीह आए थे। हलाँकि कई बार यह हमें अहम नहीं लगता होगा, पर यदि हम हमारे मार्गों के बदले परमेश्वर के मार्ग पर चलें तो हमारे पास एक प्रभावशाली सेवकाई होगी। शायद हमारे पास नेतृत्व का काफी हुनर होगा, पर यदि वे परमेश्वर के वचन पर आधारित नहीं है तो, हम लोगों को गलत दिशा की ओर ले जा सकते हैं। इस अध्याय में प्रभावशाली अगुवे के दस बाइबलीय गुण वर्तमान समय में अगुवों के द्वारा सामना करनेवाली चुनौतियों के बारे में विचार – विमर्श है।

1. परिचय

एक मसीही अगुवे का लक्ष्य क्या है?

यह <u>नहीं है</u> कि ... उपस्थिति और सहभागिता को बढ़ाना।

यह है कि .... <u>दूसरों के जीवन में मसीह का जन्म होते हुए देखना।</u>

> *"हे मेरे बालकों, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जच्चा की सी पीड़ाएं सहता हूं।"* (गल. 4:19)

एक गैर मसीही अगुवा से मसीही अगुवा कैसे भिन्न है?

वह जानता है कि – "परमेश्वर से अलग होकर वह कुछ नहीं कर सकता!!" (यूह. 15:5)

2. नेतृत्व गुण : एक प्रभावशाली अगुवे में निम्नलिखित दस गुण प्रदर्शित होते हैं :

(1) एक प्रभावशाली अगुवे को चाहिए कि वह एक <u>दिव्यदर्शी</u> हो।

"जहां दर्शन की बात नहीं होती, वहां लोग निरंकुश हो जाते हैं" नीति. 29:18

- आपको लक्ष्य तय करना है
- आपको इसे ऐसे तरीके से प्रगट करना वाहिए ताकि दूसरे आपके दर्शन में सहभागी हो सकें।

उदाहरण : मूसा ने (जलती झाड़ी में से परमेश्वर की ओर से दर्शन पाया – निर्ग. 3)।

(2) एक प्रभावशाली अगुवा सेवा में दिलचस्पी रखनेवाला हो।

"तब उस ने अपने चेलों से कहा, पक्के खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं।

इसलिये खेत के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिये मजदूर भेज दे।" मत्ती. 9:37–38

- अविश्वासियों के पास सुसमाचार पहुँचाने में सकेन्द्रित रहना है।
- दूसरे विश्वासियों को शिष्य बनाने के प्रति सक्रिय रहना।

उदाहरण : पौलुस (कई सेवकाई यात्राएं – प्रेरितों के काम)

(3) एक प्रभावशाली अगुवे को चहिए कि वह भावपूर्ण हो।

"इसलिये अब यह काम पूरा करो; कि इच्छा करने में तुम तैयार थे, वैसा ही अपनी अपनी पूंजी के अनुसार पूरा भी करो।" 2कुरि. 8:11

- अपनी सेवकाई के प्रति गहराई से ध्यान रखें।
- आपनी सफलता के प्रति वचनबद्ध रहें (भावपूर्ण – वचनबद्धता)।

उदाहरण : स्तिफनुस (वह उद्येश्य के प्रति वचनबद्ध था – प्रेरित. 7)

(4) एक प्रभावशाली अगुवा पवित्रात्मा के चलाया जानेवाला हो।

"परन्तु जब पवित्रात्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह होगे।" प्रेरित. 1:8

- पवित्रात्मा आपकी अगुवाई करे।
- आपका शक्तिश्रोत – पवित्रात्मा – के साथ जुडा रहे!

उदाहरण : दानिय्येल (उसने अपने विश्वास को नहीं त्यागा – दानि. 6)।

(5) एक प्रभावशाली अगुवे को चाहिए कि वह एक सेवक हो।

"परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने।" मत्ती. 20:26–27।

- एक अगुवे को अपने पीछे हो लेनेवालों की सेवा करने के लिए बुलाया गया है न कि उनसे सेवा लेने के लिए।
- एक सेवक अगुवा अपने पीछे हो लेनेवालों को बढ़ने में और सफल होने में उनकी सहायता करता है।

उदाहरण : यीशु (शिष्यों का पॉव धोना – यूह. 13)।

(6) एक प्रभावशाली अगुवा क्रिया–कलाप में केन्द्रित हो।

> *"हे भाइयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं: परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ, निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।"* फिलि. 3:13–14

- आपके दर्शन और सेवा से जो बातें सम्बन्धित नहीं हैं उससे न उलझें।
- आप शैतान को कभी मौका न दें कि वह आपको विनाश की ओर ले जाएं।

उदाहरण : नहेम्याह : (यरूशलेम के मन्दिर को पुनःस्थापित करने के लिए केन्द्रित था – नहे. 6)

(7) एक प्रभावशाली अगुवा साहसी हो।

> *"तब मूसा ने यहोशू को बुलाकर सब इस्राएलियों के सम्मुख कहा, कि तू हियाब बान्ध और दृढ़ हो जा; क्योंकि इन लोगों के संग उस देश में जिसे यहोवा ने इनके पूर्वजों से शपथ खाकर देने को कहा था तू जाएगा; और तू इनको उसका अधिकारी कर देगा। और तेरे आगे आगे चलनेवाला यहोवा है; वह तेरे संग रहेगा, और न तो तुझे धोखा देगा और न छोड़ देगा; इसलिये मत डर और तेरा मन कच्चा न हो।।"* व्यवस्था. 31:7–8

- अगुवे को विश्वास से कदम रखने में तैयार रहना है।
- विशाल सफलताओं को प्राप्त करने हेतु जोखिम उठाने के लिए अगुवे को तैयार रहना है।
- परमेश्वर आपको तैयार करेंगे और सामर्थ देंगे।

उदाहरण : दाऊद (गोलियत के साथ युद्ध – 1शमू. 17)।

(8) एक प्रभावशाली अगुवा भरोसा रखनेवाला हो।

> *"तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।"* नीति. 3:5

- एक अगुवा परमेश्वर पर भरोसा करता है जो कि एकमात्र विश्वासयोग्य तथा सच्चा है।
- परिस्थिति विपरीत होते समय भी एक अगुवा परमेश्वर पर भरोसा करता है।

उदाहरण : इब्राहिम (इसहाक का बलिदान – उत. 22)।

(9) एक प्रभावशाली अगुवा तैयार रहे।

"कि तू वचन को प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट, और समझा।" 2तिमु. 4:2

- तैयारी में बलिदान और आगे की पद्धती शामिल है।
- सफलता में 1 प्रतिशत प्रेरणा और 99 प्रतिशत तैयारी है।

उदाहरण : यूसुफ (अकाल के लिए तैयार हुआ – उत. 41)।

(10) एक प्रभावशाली अगुवा मौके की तलाश करनेवाला हो।

"हम भले काम करने में हियाब न छोड़े, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे। इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ।।" गल. 6:9–10

- दिन को समझें (आज के दिन परमेश्वर के द्वारा आप को दिए जानेवाले मौके का फायदा उठाएं)।
- उन अवसरों के प्रति चौकन्ना रहें।

उदाहरण : एस्तेर (उसने विनाश से अपने लोगों को छुड़ाया – एस्तेर 4)

(2) नेतृत्व चुनौतियाँ

"पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे।" 2तिमु. 3:12

नेतृत्व में उसका अपना ही चुनौतीपूर्ण पहलू है :

क. सबसे ऊपर एक मात्र अगुवा ही होता है।

1. बुद्धिमान रहें
2. निष्पक्ष रहें
3. निर्णायक रहें

ख. हमेशा हर कोई आपका साथ नहीं देंगा।

1. आपके निर्णय के प्रति चुनौतियों की प्रतीक्षा करें।
2. एक बात के प्रति विभिन्न्न लोगों के भिन्न विचार होते हैं।
3. वचन और तर्क के द्वारा अपने निर्णय का बचाव करने में सक्षम रहें न कि जज़बात से।

ग. लड़ाई को जीतना आसान है और युद्ध हारना

1. छोटी अवधि के लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रयास करते समय आपके लम्बे अवधि के दर्शन की बातों को न भूलें।
2. आपकी प्राथमिकताओं को स्पष्ट रखें।

3. लचकीले रहें, परन्तु अपने सिद्धान्तों को न त्यागें।

नेतृत्व स्वयं–मूल्याकंन

निर्देश : निम्नलिखित तालिका के अनुसार प्रत्येक गुण के बारे में आप स्वयं का मूल्याकंन करें :
1 = मुश्किल से   2 = कभी कभी   3 = निरन्तर   4 = सामान्यतः   5 = हमेशा

	गुण	अंक
1.	दिव्यदर्शी	––
2.	सेवा में दिलचस्पी	––
3.	भावपूर्ण	––
4.	पवित्रात्मा का चलाया जाना	––
5.	सेवक	––
6.	क्रिया–कलाप में केन्द्रित	––
7.	साहसी	––
8.	भरोसा रखनेवाला	––
9.	तैयार रहना	––
10.	मौके का तलाशी	––
	कुल	––

कुल अंक	अर्थ
40 और ज़्यादा	आपके पास जबरदस्त नेतृत्व कुशलता है। परमेश्वर वास्तव में आपको उपयोग कर सकते हैं!
30–39	आपके पास नेतृत्व के कुछ कौशल तो हैं, परन्तु आप में ओर भी सुधार की आवश्यकता है
20–29	आपने बहुत कम नेतृत्व के गुण को प्रदर्शित किया, और कई क्षेत्रों में विकसित होने की आवश्यकता है।
10–19	आपके भीतर नेतृत्व गुण दुर्बल है। विशेष प्रशिक्षण और सुधार आवश्यक है।
0–9	आपने कोई भी नेतृत्व गुण प्रदर्शित नहीं किया। या तो प्रशिक्षण लें, नहीं तो किसी ओर कोई पेशे को अपनाए।

अध्याय 3

नेतृत्व शैली

"और उस ने कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाला नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए।"

इफि. 4:11–12

परमेश्वर ने प्रत्येक अगुवे को इसलिए बुलाया कि वह अपनी क्षमता से परमेश्वर के जन को सेवा के कार्य के लिए तैयार करे और जिससे मसीह की देह उन्नति पाए। हलाँकि, एक व्यक्ति किस प्रकार अगुवाई करे, वह उसकी शैली और सुविधा पर निर्धारित है। हम अगुवे होने के नाते, हमारे व्यक्तित्व, वरदान और अनुभव के अनुसार अगुवाई, प्रबन्ध और परिचालन करता है। कुछ परिस्थितियों में हम जिस प्रकार अगुवाई करते हैं वे कभी प्रभावशाली होती है और कुछ ही में यह नकाम हो जाती है। इसलिए, हमारे नेतृत्व शैली और दूसरों के नेतृत्व शैली को समझना, विभिन्न परिस्थितियों में हमारी नेतृत्व कौशलता को प्रभावशाली रूप से प्रयोग करने में हमें सहायता प्रदान करता है। इस अध्याय में हम इन बातों को देखेंगे कि 4 बुनियादी नेतृत्व शैली और उसे कितने प्रभावशालीरूप से प्रयोग में ला सकते हैं।

1. नेतृत्व शैलियाँ कौन–कौन–सी हैं?

- जॉर्ज बरना की पुस्तक *"ए फिश अऊट ऑफ वाटर"*(इन्टेग्रिटी पबलिशेर्श, 2002) के अनुसार 4 प्रकार की नेतृत्व शैली हैं।

  1. निर्देशक अगुवा
     - इस प्रकार का अगुवा दिव्यदर्शी व्यक्ति है
     - इस प्रकार का अगुवा नतीज़े पर ध्यान देता है न कि विस्तृत जानकारियों में।
  2. नीतियुक्त अगुवा
     - इस प्रकार के अगुवे सूचनाओं को विशकलन करने तथा विभिन्न दृश्यलेखों को विश्लेषण करना पसन्द करते हैं।
     - इस प्रकार के अगुवे दर्शन को पूरा करने हेतु योजनाओं को बनाने और उसे विकसित करने में दिलचस्पी रखते हैं।
  3. लोगों को आपस में जोड़नेवाला अगुवा
     - इस प्रकार के अगुवे लोगों के साथ रिश्ता कायम रखने में और नियतकार्य से बढ़कर लोगों को शामिल कराने में तत्पर रहते हैं।
     - इस प्रकार के अगुवे दर्शन पूरा करने के लिए लोगों को संगठित करने में तत्पर रहते हैं।
  4. संचालक अगुवा
     - इस प्रकार के अगुवे दर्शन को काम में लाने के लिए गतिविधियों को विकसित करते हैं।

○ इस प्रकार के अगुवे पद्धति बनाते हैं और नतीज़े पर मन लगाए रखते हैं।

2. आपकी नेतृत्व शैली को निर्धारित करना

आपकी नेतृत्व शैली कौन–सी है?

नेतृत्व आचरण में कुछ कथन निम्नलिखित हैं। प्रत्येक को ध्यान से पढ़ें, और दी गई तालिका के अनुसार निर्धारित करें कि कौन–सा आपके साथ मेल खाता है। अच्छे नतीजे के लिए सच्चाई से उत्तर दें।

कभी नहीं 0 मुश्किल से 1 कभी कभी 2 अक्सर 3 सामान्यतः 4 हमेशा 5

1. .... निर्णय लेने में सहयोग देने के लिए मेरे दल को मैं प्रोत्साहित करता हूँ और उनके सुझावों को काम में लाने का प्रयास भी करता हूँ।
2. .... एक लक्ष्य या नियतकार्य को पूरा करने से बढ़कर ओर कोई प्रमुख बात नहीं।
3. .... दूसरो को आदर करना और उनका मूल्य समझना मेरी अहम प्राथमिकता है।
4. .... एक परियोजना या नियतकार्य को समय पर पूरा करने हेतु मैं समयसारणी पर विशेष ध्यान देता हूँ।
5. .... नए नियतकार्यों और प्रक्रिया में लोगों को प्रशिक्षण देने में मैं उत्सुक हूँ।
6. .... नियतकार्य जितना कठिन है उतना मैं उसका लुत्फ उठाता हूँ।
7. .... दूसरों को अपने कार्य के प्रति रचनात्मक रहने के लिए मैं प्रोत्साहित करता हूँ।
8. .... एक जटिल कार्य को पूर्णता में पहुँचाते है तो मैं चाहता हूँ कि उसकी हर एक बात की लेखा–जोखा हो।
9. .... मैं प्रशिक्षण, नेतृत्व और मनोविज्ञान के बारे में लेखनी, पुस्तक और दैनिकी को पढ़ना पसन्द करता हूँ और जो पढ़ा उसे काम में लाने का प्रयास करता हूँ।
10. .... एक ही समय में जोखिम भरे कई कार्यों को करना मुझे आसान लगता है।
11. .... दूसरों की गलतियों को सुधारते समय मैं रिश्ते खराब हो जाने के विषय में चिन्ता करता हूँ।
12. .... मैं अपने समय का उपयोग बुद्धिमानी से करता हूँ।
13. .... एक जोखिम भरे नियतकार्य या परियोजना के बारे में हर पहलू मैं जिनकी अगुवाई करता हूँ उनसे कहने में मैं आनन्द उठाता हूँ।
14. .... विशाल परियोजनाओं को संचालनीय कार्यों में तबदील करना मेरा स्वभाव में से एक है।
15. .... एक महान दल को बनाने के अलावा ओर कोई प्रमुख कार्य नहीं हैं।
16. .... परेशानियों को विशलेषण करने में मैं आनन्दित होता हूँ।
17. .... मैं दूसरों की सीमाओं की कदर करता हूँ।
18. .... मैं सेवकाई के बारे में लेखनी तथा पुस्तक को पढ़ना पसन्द करता हूँ; और सीखी हुई प्रक्रियाओं को काम में लाता हूँ।

19. .... अपने आचरण या अनुपालन में उन्नति लाने के विषय में दूसरों को सलाह देना मेरे स्वभाव में से एक है।

20. .... गतिविधियों को संघटित करना और योजना बनाने में मैं आनन्द मनाता हूँ।

मूल्याकंन विभाग

प्रश्नोत्तर को पूरा करने के बाद, निम्नलिखित स्थान की ओर अपने उत्तर को स्थानातरित करो।

लोग	नियतकार्य
प्रश्न	प्रश्न
1.	2. ....
3.	4. ....
5.	6. ....
7.	8. ....
9.	10. ....
11.	12. ....
13.	14. ....
15.	16. ....
17.	18. ....
19.	20. ....
कुल	कुल ....
(उत्तर को 10 से भाग करे और 2 से गुणा करें)	(उत्तर को 10 से भाग करे और 2 से गुणा करें)
अंक :	अंक : ....

परिणाम विभाग

नीचे दिए गए ग्राफ में लम्ब अक्ष में आपको लोगों से मिले हुए कुल अंक को एक बिन्दु के द्वारा अंकित करें, कार्य से मिले हुए अंक को क्षितिज अक्ष में अंकित करें। और दोनों बिन्दुओं में से दो सीधी रेखाएं खींचे जब तक वे आपस में नहीं मिल जातीं। आपस में जुड़े हुए यह क्षेत्र आपके नेतृत्व के आयाम हैं जो आपके द्वारा परिचालित होता है।

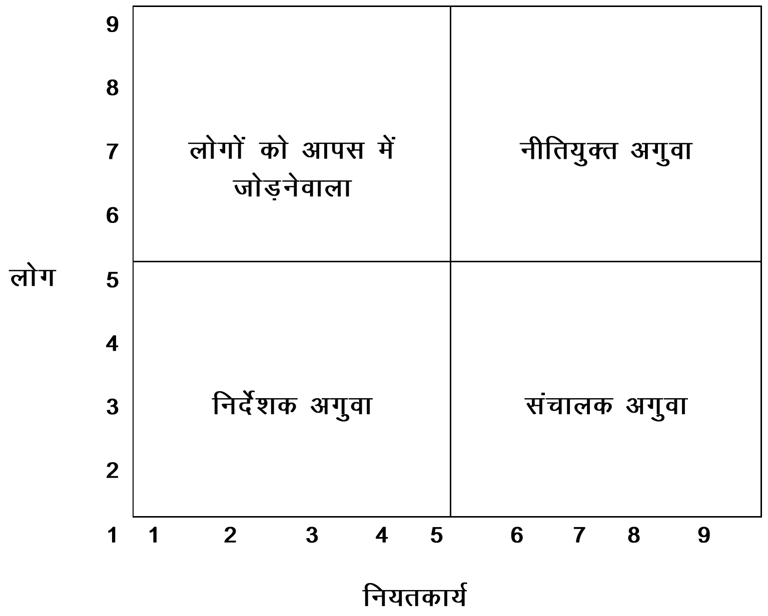

3. नेतृत्व शैली को लागू करना

1. जॉर्ज बरना के अनुसार प्रत्येक अगुवे इन में से किसी शैली में हावी होने का प्रयास करते हैं हलाँकि हर एक अगुवे में हर एक शैली की कुछ न कुछ बातें तो होती हैं।

2. दूसरी शैलियों से परिपूर्ण अगुवों से आप अपने को घेरें।

   - वे आपको सम्पूरक कर देंगे
   - वे बातों को ऐसे तरीके से देखेंगे जैसे आप नहीं देख पाते हैं

   "बिना सम्मति की कल्पनाएं निष्फल हुआ करती हैं, परन्तु बहुत से मंत्रियों की सम्मति से बात ठहरती है।" नीति. 15:22

3. अपने बल से अगुवाई करें, न कि अपनी निर्बलता से।

   "और जब कि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न भिन्न बरदान मिले हैं, तो जिस को भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे। यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा

रहे। जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे, जो अगुवाई करे, वह उत्साह से करे, जो दया करे, वह हर्ष से करे।" रोमि. 12:6–8

4. मौकापरस्त नेतृत्व को समझें

- आपकी प्रबल नेतृत्व शैली <u>हर</u> मौके पर काम नहीं आएगी।
- इस बात को निर्धारित करें कि मौके पर कौन–सी नेतृत्व शैली प्रभावकारी होगी।

  उदाहरण :

  1. आपकी सेवकाई में नई प्रक्रिया को आरम्भ करना – निर्देशक नेतृत्व (जब कार्यवाही की आवश्यकता हो)
  2. आपकी सेवकाई के लिए योजनाओं को विकसित करना – नीतियुक्त नेतृत्व (जब विश्लेषण और योजना की आवश्यकता हो)
  3. आपकी सेवकाई में उठनेवाले संघर्ष को समाधान करना – लोगों को आपस में जोड़नेवाला नेतृत्व (जब लोगों के साथ कार्य करने की आवश्यकता हो)
  4. आपकी सेवकाई में तकनीकि के उपयोग करना – संचालक नेतृत्व (जब तन्त्र और प्रक्रिया की आवश्यकता हो)

- आपके दल के किसी दूसरे अगुवे के उपयोग के बारे में सोचें जिनके पास नेतृत्व शैली की प्रबल निपुणता हो
  - निर्णायक अधिकार आपके ही पास बनाए रखना है।
  - आपके दल के किसी ओर अगुवे को परियोजना या नियतकार्य के नेतृत्व सौंपे।

5.विशेष परिस्थिति में गलत नेतृत्व शैली अपनाने के द्वारा निम्नलिखित नतीज़े का समाना करना पड़ेगा।

- आप के नेतृत्व का प्रतिरोध होगा
- आपकी विश्वसनीयता को क्षति पहुँचेगी
- आप अनचाहे संघर्षों को उत्पन्न करेंगे
- आप की सेवकाई स्थगित हो जाएगी या पीड़ित हो जाएगी।

नेतृत्व शैली – अभ्यास

निर्देश : बाईं ओर लिखी हुई परिस्थितियों के हेतु प्रयोग किए जा सकनेवाली उपयुक्त नेतृत्व शैली (निर्देशक, नीतियुक्त, लोगों को आपस में जोड़नेवाले, संचालक) को दहिने ओर लिखें।

परिस्थिति	प्रयोग किया जा सकनेवाले नेतृत्व शैली
1. आपकी कलीसिया के लिए एक कंप्यूटर का प्रस्ताव किया गया और आप को चाहिए कि आप निर्धारित करें कि उसका उपयोग सही से किस प्रकार किया जाए।	
2. आप एक कारागृह सेवकाई का आरम्भ कर रहें हैं और नहीं चाहते हैं कि दूसरी सेवकाईयों के लिए रखी हुई सामग्रियों को इस के लिए उपयोग किया जाए।	
3. आपका आराधना दल आराधना अगुवे के बारे में शिकायत लेकर आपके पास आया हुआ है।	
4. आप इस बात को जानते हैं कि आपके इर्द–गिर्द में सुसमाचार फैलाना है परन्तु आप इस बात से निश्चित नहीं है कि इसे किस प्रकार किया जाए।	
5. आप अपनी मण्डली को एक नई और विशाल जगह की ओर ले जाना चाहते हैं वह भी शहर की दूसरी तरफ।	
6. कुछ लोगों को आपकी आराधना के तौर–तरीके से शिकायत है और वे चाहते हैं कि आप कुछ अलग तरीकों को अपनाएं।	
7. आप बाल सेवकाई लक्ष्य से चूक रहें है और उपस्थिति कम होती जा रही है।	
8. आपके निकट में आरम्भ की गई नई कलीसिया की ओर आप लोग आपके कलीसिया को छोड़कर जा रहे हैं।	
9. उसी शहर की किसी अन्य कलीसिया ने अपने कार्यक्रमों को चलाने के लिए आपकी कलीसिया भवन की माँग की है।	
10. आपकी कलीसिया में लोगों द्वारा दूसरों के बारे में निरर्थक बातों को फैलाने की एक समस्या है।	

अध्याय 4

अगुवों को विकसित करना

"यहोवा ने मूसा से कहा, तू नून के पुत्र यहोशू को लेकर उस पर हाथ रख; वह तो ऐसा पुरूष है जिस में मेरा आत्मा बसा है;और उसको एलीआजर याजक के और सारी मण्डली के साम्हने खड़ा करके उनके साम्हने उसे आज्ञा दे। और अपनी महिमा में से कुछ उसे दे, जिस से इस्राएलियों की सारी मण्डली उसकी माना करे।"

गिनती. 27:18–20

प्रभु ने जिस सेवकाई के लिए हमें बुलाया है उसे पूरा करने के लिए एक विशाल उत्तरदायित्व के साथ कलीसिया या सेवकाई का नेतृत्व मिलता है। अक्सर हम ऐसा सोचते हैं कि जिस सेवकाई का नेतृत्व हम कर रहे हैं उसका नेतृत्व प्रभावशाली रूप से करने के लिए अगुवे को उसके हर एक पहलू में घनिष्ठता से सम्मिलित होना आवश्यक है। परन्तु वास्तव में हम ऐसा कर नहीं सकते हैं। हर एक सभा की अगुवाई हम नहीं कर पाते हैं, हर एक पहलू को देख नहीं पाएंगे और हर निर्णय भी नहीं ले सकते हैं। अगुवे होने के नाते यदि हम अपने लक्ष्य को पाना चाहते हैं तो दूसरों की क्षमता तथा सहायता की सूची हमारे पास होनी चाहिए। अर्थात् हमें सम्भावित अगुवों को पहचानना और उन्हें विकसित करना चाहिए ताकि वे हमारे अधिकार सीमा में रहकर नेतृत्व कार्य तथा प्रबन्ध कर सकें। जैसा मूसा ने यहोशू पर हाथ रखा वैसे आपको भी "जो आत्मा" में उन्हें पहचाना आवश्यक है तथा आपके अधिकार क्षेत्र में रहकर आपकी ओर से कार्य करने के लिए अधिकार प्रदान करना है। इस अध्याय में हम पुनरावलोकन करेंगे कि एक अगुवा कौन होता है और अगुवों को विकसित करना इतना आवश्यक क्यों है और किस प्रकार उन्हें पहचान सकते तथा विकसित कर सकते हैं।

1. एक अगुवा कौन है?

बाइबल के अनुसार, एक अगुवा है ...

1. जो मसीह में अपनी पहचान को जाननेवाला हो (2कुरि. 5:15–21)

    क. वे जानते हैं कि हम सब मसीह के लिए सेवक हैं (1पत.2:9)

    ख. उन्होंने अपने सामर्थ से हमें सुसज्जित किया है (इफि. 1:18–20; 3:14–20)।

    ग. परमेश्वर की देह में हम में से प्रत्येक महत्वपूर्ण हैं (1कुरि. 12:27)।

2- आत्मिक वरदानों को समझता है

    क. उन्होंने हर एक को आत्मिक वरदान दिए हैं (1कुरि. 12:27)।

    ख. हम अपने वरदानों का उपयोग करने के लिए बुलाए गए हैं (इफि. 4: 11–13)।

    ग. दूसरों के वरदानों को उपयोग करने के प्रति एक अगुवा जिम्मेवार है (2तिमु. 2:2)।

3. वे अपने पेशे को समझते हैं कि उन्हें नमक और ज्योति बनना है (मत्ति. 5:13–16)।

क. अपनी संस्कृति में हमें प्रभाव डालनेवाले बनना है (कुलु. 4:5–6)।

ख. हम आदर्श हैं (1 थिस्स. 1:7)।

ग. हम राजदूत हैं (2कुरि. 5:17)।

4. सुसमाचार फैलाने (प्रेरित. 1:8) और मसीह के लिए शिष्य बनाने हेतु वह वचनबद्ध हैं (मत्ति. 28:19)।

2. अन्य अगुवों को विकसित करना इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

1. इसी प्रकार परमेश्वर के राज्य की प्रगति होती है।

- यीशु ने अपने शिष्यों के द्वारा सेवकाई के गुणन के सिद्धान्त को सिखाया।
    - यीशु ने इस धरती में अपनी कलीसिया का निर्माण कर ऐसे गिने–चुने अगुवों को अलग किया।
    - यीशु को उन्हें शिष्य बनाना और सुसज्जित करना आवश्यक था।
    - उन्होंने उनसे कहा कि *"जाकर सारी सृष्टि के लोगों को शिष्य बनाओ।"* – मत्ति. 28:19
- यीशु ने स्वयं पूरी कलीसिया का निर्माण अकेले नहीं किया

    "जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं।" – यूह. 20:21

    - पौलुस ने कई सारी मिशनरी यात्राएं की ।
    - अन्य शिष्य और अनुयायी लोगों ने कलीसियाओं की स्थापना की।
- कलीसिया एक देह है, और हर एक को अपनी भूमिका अदा करनी है

    "इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग अलग उसके अंग हो।" – 1कुरि. 12:27

2. यह आपकी सेवकाई को गुणन करता है

- अधिक लोगों तक आपकी सेवकाई को विस्तृत करने में यह आपको काबिल बनाता है
    - आपकी सेवकाई अधिकतर जीवनों को प्रभावित करती है
    - आपकी सेवकाई ओर भी प्रभुल्लित होगी
- कम समय और प्रयास में अधिकमात्रा में पूरा करने के लिए यह आपकी सहायता करती है
    - हर जगह आप उपस्थित नहीं हो सकते हैं
    - हर काम हमेशा आप नहीं कर सकते हैं

        "यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलानेपिलाने की सेवा में रहें।" – प्रेरित. 6:2

- आप जिन मौके को देख नहीं पाए या पीछा नहीं कर पाए ऐसे अवसरों को खोलते हैं
    - दूसरे अगुवों के पास बाँटने के लिए अन्य वरदान होते हैं
    - दूसरे अगुवों के पास अन्य जोश और दिलचस्पी होती है

3. यह आपकी कलीसिया के भीतर पवित्रात्मा को कार्य करने का अवसर प्रदान करता है।

- पवित्रात्मा हर एक व्यक्ति के द्वारा कार्य करते हैं, न केवल पासबानों द्वारा
    - हम समस्त विश्वासियों के याजक हैं

      "क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या युनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम एक को एक ही आत्मा पिलाया गया।" – 1कुरि. 12:13

    - समस्त विश्वासियों को पवित्रात्मा सामर्थ देते हैं

      "परन्तु जब पवित्रात्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे" – प्रेरित. 1:8

4. सेवकाई की सफलता और विफलता नेतृत्व और पवित्रात्मा पर निर्भर है।

- एक काबिल नेतृत्व के बिना सेवकाई सफलता प्राप्त नहीं कर सकती है
    - अच्छे अगुवे खराब सेवकाईयों को पुनःस्थापित कर सकते हैं
    - खराब अगुवे सफल सेवकाईयों को बरबाद कर देते हैं
- हमारे सामर्थ का श्रोत पवित्रात्मा *ही* है
    - हम केवल बीज लगानेवाला ही हैं

      "इसलिए न तो लगानेवाला कुछ है, और न सींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ानेवाला है।" – 1कुरि. 3:7

    - पवित्रात्मा परमेश्वर से हमें सामर्थ मिलता है

      "परमेश्वर से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।" – यूह. 15:5

3. दूसरे अगुवे को आप किस प्रकार पहचानेंगे?

1. सशक्त अगुवे की कसौटी

- चरित्रयुक्त व्यक्ति

  "सो चाहिए, कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, पहुनाई करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो। पियक्कड़ या मारपीट करनेवाला न हो; बरन कोमल हो, और न झगड़ालू, और न लोभी हो" – 1तिमु. 3:2–3

- विश्वासी हो

  "फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो, कि अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए।" – 1तिमु. 3:6

''पर विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखें।'' – 1तिमु. 3:9

- पवित्रात्मा से परिपूर्ण हो

  ''इसलिये हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरूषों को जो पवित्रात्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हो, चुन लो,'' – प्रेरित. 6:3

2. अगुवे की कसौटी जिसे बाइबल में उल्लेख नहीं किया गया है (पर आम रीति से प्रयोग किया जाता है)

   - शिक्षा
   - सामाजिक स्तर
   - अनुभव

   ये बातें होना अच्छी बात है परन्तु इसे प्राथमिक कसौटी <u>नहीं</u> बनाए

3. अगुवों को चुनना

   - जोशीले व्यक्तियों को चुनें
   - जिसे प्रशिक्षण दे सकते हैं ऐसों को चुनें
   - जिनके पास ज़रूरी या सही वरदान हैं उन्हें चुनें

4. आप अन्य अगुवों को किस प्रकार विकसित करेंगे? (मत्ती. 10 अध्याय पर ध्यान करें)

   चरण – 1 उन्हें शिष्य बनाएं

   - सप्ताहिक परामर्श
   - प्रोत्साहन के शब्द और कार्य
   - विश्वास का निर्माण
   - तैयारी (अगुवे का प्रशिक्षण)

   चरण – 2 उन्हें जिम्मेवारियाँ सौंपे (मत्ती. 10:1)

   - उन्हें अगुवाई करने या प्रबन्ध करने के लिए कुछ दें
   - एक कार्य को पूरा करने हेतु उन्हें अधिकार दें
   - उनके आत्मविश्वास का निर्माण करें

   चरण – 3 आपकी कामनाओं को उन तक संचारित करें (मत्ती. 10:6–8, 16)

   - स्पष्ट लक्ष्य रखें और एक नेतृत्व योजना को बनाने में उनकी सहायता करें

- प्राचाल या कार्य करने सम्बन्धी नियम बनाए

चरण – 4 उन्हें जवाबदेह बनाएं (मत्ती. 10:32–33)

- उनसे अपेक्षा करें कि वे लक्ष्य को पूरा करें
- यदि वहाँ कोई समस्या है तो आप उसमें न उलझें बल्कि उन्हें उसका समाधान निकालने का अवसर प्रदान करें
    - ज़रूरत होने पर सलाह दें
    - आपके सम्मुख में वे समाधान लेकर आए

चरण – 5 नियमित रूप से उनकी समीक्षा करते रहें

- लाभ–विषयों और दिलचस्प बातों पर विचार–विमर्श करने के लिए नियमित रूप से मिलते रहें
- उनको उन्हीं पर न छोड़े या उनकी अवहेलना करें
- उनके सीखने तथा सफलता में आपकी दिलचस्पी दिखाए

चरण – 6 उन्हें सेवकाई के लिए मुक्त करें

- जब वे तैयार हो जाते हैं तो उन्हें भेज दें – उन्हें पीछे की ओर खींचकर न रखें
- उन्हें अगुवाई करने हेतु एक सेवकाई उपलब्ध कराएं
- सेवकाई कार्य के लिए अन्हें अधिकार दें

अगुवों को विकसित करना – अभ्यास

हर एक नेतृत्व पद्वी के सामने आत्मिक वरदानों और कुशलताओं या अनुभवों को लिखें जिन्हें उस पद्वी के लिए आप आवश्यक समझते हैं।

सेवकाई की पद्वी	आत्मिक वरदान**	कुशलता या अनुभव
1. पासबान		
2. आराधना के अगुवे		
3. बाल सेवकाई अगुवे		
4. युवा सेवकाई अगुवे		
5. प्राचीन		
6. शिक्षक		
7. सुसमाचार प्रचारक		
8. मिशनरी		
9. आर्थिक प्रबन्धक		
10. प्रार्थना सेवकाई अगुवे		

**पन्ना 37–38 में दिए गए आत्मिक वरदानों की सूची पर ध्यान करें

भाग 2:

<u>लोगों का प्रबन्धकदल</u>

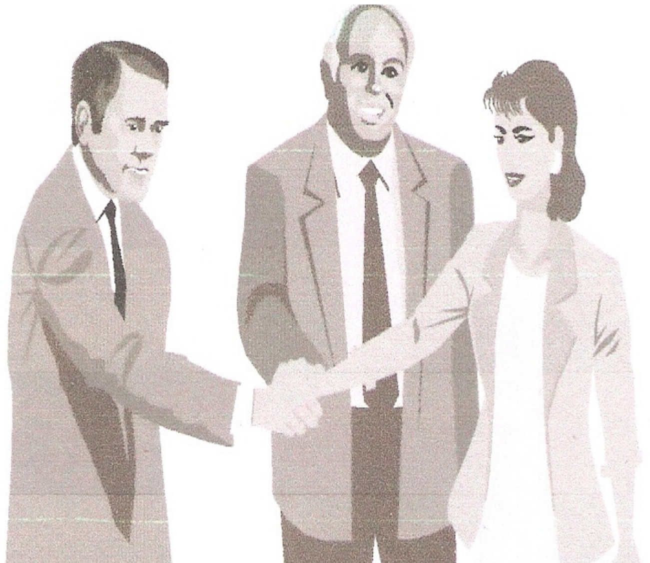

अध्याय 5

आत्मिक वरदान

" किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है।।"

1कुरि. 12:7,11

बाइबल कहती है कि यीशु की देह के निर्माण हेतु हर एक मसीह को आत्मिक वरदानों से नवाज़ा गया है। परन्तु वास्तव में आत्मिक वरदान क्या हैं? क्या वे हमारी कौशल तथा प्रतिभा के समान हैं? हमें कैसे मालूम है कि हमारे पास आत्मिक वरदान हैं? और हमें कैसे मालूम है कि उसे कब उपयोग करना है? जब कलीसिया में अपनी भूमिका को समझने के समय आने पर इन प्रश्नों को मसीहियों द्वारा आम रीति से पूछा जाता है। एक अगुवा होने के नाते आपको अपने वरदानों को जानना जितना महत्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण है अन्य के वरदानों के बारे में भी जानना, जिससे उन्हें परमेश्वर जिस क्षेत्र में प्रभावशालीरूप से उपयोग करना चाहते हैं वहाँ की ओर आप उनकी अगुवाई कर सकते हैं। इस अध्याय में हम देखेंगे कि आत्मिक वरदान क्या हैं, वे क्यों महत्वपूर्ण हैं और राज्य के प्रभाव के लिए उसे किस प्रकार प्रयोग किया जाएं। आपके आत्मिक वरदानों को निर्धारित करने के लिए हमने एक मूल्यांकन तालिका भी आप को उपलब्ध की है।

1. आत्मिक वरदान क्या हैं?

- आत्मिक वरदान यीशु मसीह के पीछे हो लेनेवालों को पवित्रात्मा की ओर से मिलनेवाली प्रतिभाएं है जिसके द्वारा वे सेवकाई के लिए उन्हें तैयार कर सकें।

    1. यह सब के लाभ के लिए दिया जाता हैं

       " किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। " 1कुरि. 12:7

    2. ये वरदान पवित्रात्मा जिसे चाहते है उसे देते हैं

       "जिसे जो चाहता है वह बांट देता है।" 1कुरि. 12:11

    3. आवश्यकताओं के अनुसार इन वरदानों को दिया जाता है

- आत्मिक वरदान तीन मुख्य वर्गों में बंटता है।

    1. सेवकाई का वरदान – विशिष्टरूप से एक पद्वी हेतु बुलाहट
    2. प्रायोगिक वरदान – दूसरों की सेवा करने हेतु
    3. अद्भुत करने का वरदान – आत्मिक सामर्थ का प्रगटीकरण

- बाइबल 21 सुनिश्चित वरदानों की पुष्टि करता है

    1. सेवकाई

        - प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, संसमाचार प्रचारक, चरवाहा, शिक्षक

''और उस ने कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया।'' इफि. 4:11

2. प्रायोगिक

- सेवा, प्रोत्साहन, देना, नेतृत्व, दया, सहायता, शासन

  ''यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे। जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे, जो अगुवाई करे, वह उत्साह से करे, जो दया करे, वह हर्ष से करे।'' रोमि. 12:7–8

  ''और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार करनेवाले, और प्रधान, और नाना प्रकार की भाषा बालनेवाले।'' 1कुरि. 12:28

3. अद्भुत करने का

- बुद्धि, ज्ञान, परख, भविष्यद्वाणी, भाषाएं, व्याख्या, विश्वास, चंगाई, चमत्कार

  ''क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं; और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें। और किसी को उसी आत्मा से विश्वास; और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का बरदान दिया जाता है। फिर किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति; और किसी को भविष्यद्वाणी की; और किसी को अनेक प्रकार की भाषा; और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना। '' 1कुरि. 12:8–10

बाइबल में ओर भी आत्मिक वरदानों को उल्लेखित किया हुआ है, परन्तु इन्हें नए नियम में स्पष्टता से पहचाना गया है।

2. आत्मिक वरदान क्यों महत्वपूर्ण हैं?

- मानवजाति के प्रति परमेश्वर की योजना तथा उद्येश्य को पूरा करने के लिए

  '' अब शान्तिदाता परमेश्वर ... तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे ...'' – इब्रा. 13:20–21

- परमेश्वर के जन को सेवा के कार्य के लिए तैयार करने हेतु

  ''जिस से पवित्र लोग सिद्ध जो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए।'' – इफि. 4:12

- आत्मिक परिपक्वता प्राप्त करने के लिए

''जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं,'' – इफि. 4:13

- मसीह की देह की एकता के लिए

  ''इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग अलग उसके अंग हो।'' – 1कुरि. 12:27

3. आत्मिक वरदानों को किस प्रकार उपयोग किया जाए और काम में लाया जाए?

- कलीसिया के निर्माण के लिए

  ''इसलिये तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो, कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो।'' – 1कुरि. 14:12

- दूसरों की सेवा के लिए

  ''जिस को जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों की नाई एक दूसरे की सेवा में लगाए'' – 1पत. 4:10

- परमेश्वर की महिमा के लिए

  ''यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले, मानों परमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे; तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है; जिस से सब बातों मे यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगट हो'' – 1पत. 4:11

- परमेश्वर के चरित्र को प्रगट करने के लिए

  ''पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं'' – गल. 5:22

4. आत्मिक वरदान का मूल्यांकन

- यह क्या है?
  - यह एक खोजबीन की सामग्री है जिसमें प्रश्न और कई उत्तर का प्रयोग किया जाता है
  - एक व्यक्ति के आत्मिक वरदान को निर्धारित करने के लिए उपयोग करनेवाली सामग्री है
  - कलीसिया में अपनी भूमिका को ढूंढ निकालने के लिए सहायता करनेवाली एक सलाह
- यह क्या नहीं है?
  - यह परम नहीं है। समय के अनुसार वरदान भी बदल सकते हैं
  - एक व्यक्ति की सेवा या सेवकाई को सीमित करने के लिए इसका उपयोग नहीं करना चाहिए। आवश्यकता के अनुसार वरदानों को परमेश्वर द्वारा दिया जा सकता है।

आत्मिक वरदान जाँच

http://www.kodachrome.org/spiritgift

परमेश्वर ने हर व्यक्ति को आत्मिक वरदानों से नवाज़ा है। आपको पता है कि किस प्रकार के आत्मिक वरदान परमेश्वर ने आप को दिए हैं? यदि आप अपने आत्मिक वरदानों के प्रति अचरज है तो यह जाँच आपके पास के वरदानों को आपके पास प्रदर्शित करेगी।

यह आत्मिक वरदानों की जाँच है। इस में 110 कथन है जिसका उत्तर आप को हमेशा, सामान्यतः, कभी कभी, कभी नहीं और मुश्किल से इन श्ब्दों के द्वारा देना है जो कि यह आप उस कथन के बारे में क्या महसूस करते है उसका संकेत है।

इस बात को ध्यान करें कि यह जाँच मनुष्य के द्वारा बनाई हुई है न कि परमेश्वर के द्वारा, और इस वजह से वे असिद्ध है। यह आपके आत्मिक वरदानों की खोजबीन के लिए उपयेग करनेवाले शुरूवाती स्थान के रूप में हो, और यह वास्तव में एक परिशुद्ध संकेत नहीं है। शायद यह जाँच हमेशा आपके वास्तविक आत्मिक वरदानों की ओर संकेत नहीं करेगी। यह आपको परमेश्वर ने किस प्रकार आशिषित किया और आप को किस प्रकार दूसरों को आशिषित करना चाहिए इस बात के लिए जीवन भर की खोजबीन करने योग्य सामग्री है।

समस्त कथनों का उत्तर देने के लिए आपको पर्याप्त समय का उपयोग करना चाहिए, नहीं तो यह जाँच कोई भी अर्थयुक्त नतीज़ा नहीं प्रदान करेगी।

निम्नलिखित तालिका के अनुसार प्रत्येक कथनों का प्रत्युत्तर आपके मन में उस कथन के बारे में प्रथम आनेवाले विचार के अनुसार अंक दें :

हमेशा	5
सामान्यतः	4
अक्सर	3
कभी कभी	2
मुश्किल से	1
कभी नहीं	0

आईए आरम्भ करें :

1. – ऐसा लगता है कि मेरे नेतृत्व को लोग अधिक प्रतिरोध किए बिना पीछा करना चाहते हैं।
2. – सह–मसीहियों के साथ मैं परमेश्वर के वचन को उद्घोषित करना चाहता हूँ।
3. – कलीसिया में न आनेवालों के साथ उद्धार के बारे में परमेश्वर की योजनाओं को बाँटने से मुझे आनन्द मिलता है।
4. – दूसरे लोगों को उनके आत्मिक जीवन में अगुवाई करने की जिम्मेवारी को लेने में मजा आता है।
5. – पवित्रशास्त्र के भीतर प्रमुख सच्चाईयों को खोजने में लोगों की सहायता करने में मैं बहुत उत्साहित हूँ।

6. – अकेले और दूसरों के साथ भी परमेश्वर की स्तुति गान करने में मुझे एक अलग सा आनन्द मिलता है।

7. – एक ऊँची वचनबद्धता की ओर लोगों को प्रेरित करना एक सुखद बात है।

8. – ऐसा लगता है जिन्हें आत्मिक समस्या है वे मेरे पास सलाह और परामर्श के लिए आते हैं।

9. – मुझे स्कूल में सर्वोत्तम दर्ज़ा मिला था।

10. – कलीसिया के इर्द–गिर्द के छोटे–छोटे कार्यों को करने में बड़ा सुकून मिलता है।

11. – लोगों के कार्यों में उनकी सहायता करने के अवसर की तलाश में मैं रहता हूँ।

12. – सामूहिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लोगों की अगुवाई करने में बड़ा आनन्द है

13. – अधिक प्रभावशाली सेवकाई के लिए लोगों को संगठित करने में मैं तत्पर हूँ।

14. – प्रभु के कार्य के लिए बड़ी धनराशी देने में मुझे संतुष्टि है।

15. – दूसरो की समस्याओं के प्रति मैं तरस खाता हूँ

16. – ऐसा लगता है कि एक व्यक्ति के बारे में वह ईमानदार या बेईमान है करके पूर्वानुमान लगाना आसान है।

17. – मुझे परमेश्वर पर पूरा भरोसा है इसलिए असम्भव बातों आजमाने में मैं तैयार हूँ।

18. – मेरे घर में लोगों की उपस्थिति मुझे खुशी दिलाती है।

19. – मैंने पाया कि मेरे वातावरण की मरम्मत के सारे काम आसानी से मेरे पास आते हैं।

20. – मुझे लगता है कि मैं दूसरों से पहले प्रार्थनाओं की आवश्यकताओं को पहचानता हूँ।

21. – शारीरिक रूप से बीमार व्यक्ति के साथ या उनके लिए उनकी चंगाई हेतु प्रार्थना करना मैं पसन्द करता हूँ।

22. – मेरी संस्कृति से अलग एक संस्कृति को मैं जल्द अपना लेता हूँ।

23. – एक झुण्ड के साथ मेरे सम्बन्ध में एक अधिकार को मैं महसूस करता हूँ।

24. – दूसरों को आश्वासन देने हेतु दूसरों को परमेश्वर वचन की मनादी करना मैं पसन्द करता हूँ।

25. – ऐसा लगता है कि यीशु को ग्रहण करने के लिए एक व्यक्ति को कब पवित्रात्मा ने तैयार किया इस बात को निर्धारित करने में मैं सक्षम हूँ।

26. – एक मण्डली में आत्मिक नेतृत्व करना उत्साह भरी बात है।

27. – कलीसिया के भीतर बाइबल क्लास में शिक्षा देना मुझे आनन्द दिलानेवाली बातों में से एक है।

28. – परमेश्वर ने मुझे वाद्ययन्त्र बजाने की काबिलियत दी है और मैं उससे आनन्द लेता हूँ

29. – हतोतसाहितों को उत्साहित करना मेरे लिए सुकून की बात है।

30. – जीवन की कठिन परीस्थितियों का समाधाान प्रदान करने में मैं आनन्द उठाता हूँ।

31. – विषम सच्चाईयों को सीखना आसान लगता है।

32. – परमेश्वर की महिमा के लिए दैनिक कार्यों को करना मुझे खुशी दिलाता है।

33. – कलीसिया के आकस्मिक कार्यों की सहायता करना मुझे अच्छा लगता है।

34. – ऐसा लगता है कि एक प्रमुख कार्य को करने में मेरी सहायता करना लोगों के लिए आनन्द की बात है।

35. – महत्वपूर्ण निर्णय लेने में खुशी है

36. – मेरी आमदनी में से एक हिस्सा प्रभु को लिए देने में मैं सुकून पाता हूँ।

37. – एकांतसेवी गृहों में रहनेवाले लोगों से मुलाकात करना मुझे संतुष्टि प्रदान करता है।

38. – ऐसा लगता है कि कोई बात की सही या गलत की पहचान मुझे जल्द होती है।

39. – जब बातें असम्भव लगती हैं तब भी आगे बढ़ने के लिए मैं तैयार रहता हूँ।

40. – जब लोग अचानक मुझे छोड़ देते हैं तो मुझे बुरा नहीं लगता।

41. – विभिन्न प्रकार के हस्त–शिल्पों को बनाने में मुझे सुकून मिलता है।

42. – मेरा पसन्दीले आत्मिक अभ्यासों में से एक है प्रार्थना।

43. – मैं ने भावुक रूप से बीमार एक व्यक्ति के लिए प्रार्थना की और उस व्यक्ति को चंगा होते हुए देखा है।

44. – नए समाज में जाकर मित्रों को बनाना मेरे लिए आसान सा काम है।

45. – जहाँ परमेश्वर लोगों को ले जाना चाहते है वहाँ की ओर उनकी अगुवाई करने में मुझे थोड़ा सा डर है।

46. – वर्तमान समय के विषयों का साथ छोड़कर परमेश्वर के वचन को सुनाने में मैं आनन्द उठाता हूँ।

47. – दूसरों के साथ सुसमाचार बाँटने का बोझ मुझको हैं।

48. – आत्मिक परेशानियों से होकर गुजरनेवालों की सहायता करना मैं पसन्द करता हूँ।

49. – ऐसा लगता है कि जब मैं सिखाता हूँ तब लोग सीखते हैं।

50. – कलीसिया, स्कूल और स्थानीय संगीत रचनाओं में शामिल होने में मैं आनन्द उठाता था।

51. – निष्क्रीय कलीसिया के सदस्यों को क्रियाशील बनाने हेतु प्रोत्साहित करने में उत्सुक रहता हूँ।

52. – ऐसा लगता है कि लोग मेरे परामर्श का पीछा करते हैं।

53. – परमेश्वर के वचन की कठिन बातों को समझने में मैं सक्षम हूँ।

54. – कलीसिया के भीतर छोटे या तुच्क्ष कार्यों को करने के द्वारा मुझे संतुष्टि मिली है।

55. – दूसरों को प्रमुख सेवकाई की ओर स्वतन्त्र करनेवाले कार्यों को करने में मैं इच्छा रखता हूँ।

56. – एक कार्य को स्वयं करने की बजाय उस कार्यभार को किसी ओर को सौंपना ज्यादा प्रभावकारी बनता है।

57. – सामूहिक लक्ष्य प्राप्ति के पूर्तीकरण की जिम्मेवारी लेने में मुझे सुकून मिलता है।

58. – एक गम्भीर परीस्थिति को संभालने के लिए आर्थिकरूप से सहायता करने के अवसर की सराहना मैं करता हूँ।

59. – विषम परिस्थितियों में लोगों को आश्वासन दिलाने में मुझे खुशी है।

60. – सत्य और गलत का फर्क मुझे आसानी से पता लगता है।

61. – दूसरे लोग जिस बात असम्भव समझते हैं उस परिस्थिति से परमेश्वर हमें ले चलेंगे इस बात पर परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए मैं अक्सर तैयार रहता हूँ।

62. – ऐसा लगता है कि लोग मेरे घर में चैन महसूस करते हैं।

63. – मैं अपने हाथों से किसी चीज़ की रचना करना पसन्द करता हूँ।

64. – वास्तविक रूप से परमेश्वर मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर मुझे देते हैं।

65. – मैं शारीरिक रूप से बीमार एक व्यक्ति के पास गया और उसकी चंगाई के लिए प्रार्थना की और देखा की उसकी सेहत में सुधार आया।

66. – विभिन्न स्थान और संस्कृति में रहनेवाले मसीहियों के साथ मैं सम्बन्ध बनाए रखने में सक्षम हूँ।

67. – दूसरों से परमेश्वर के वचन की मनादी करने के अवसर की मैं सराहना करता हूँ।

68. – वर्तमान समय में इस संसार में परमेश्वर के वचन से चेतावनी देना और न्याय के बारे में प्रचार करना मेरे लिए महत्वपूर्ण बात है।

69. – यीशु मसीह मेरे लिए कितने मायने रखते हैं इस विषय को कलीसिया में न जाननेवाले मेरे पड़ोसी के साथ बाँटना मेरे लिए खुशी की बात है।

70. – लोग अपनी समस्या तथा चिंताओं को मेरे पास ले आना पसन्द करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि मुझे उनकी चिंता है।

71. – लोगों को अधिक प्रभावकारी मसीही बनने के लिए प्रशिक्षण देना मेरी सेवकाई से मिलनेवाली खुशियों में से एक है।

72. – मैं इस बात से सुरक्षित हूँ कि मेरे संगीत की क्षमता के कारण मेरे साथ जितने भी लोगों का उठना–बैठना है वे कुछ न कुछ लाभ उनके जीवन में पहुँचा रहे हैं।

73. – घबराए हुए लोग अक्सर मेरे पास प्रोत्साहन तथा तसल्ली के लिए आते हैं।

74. – विषम परिस्थितियों में उत्तम विकल्पों को चुनने में मेरे पास विशेष अर्न्तदृष्टि है।

75. – बाइबलीय उपदेशों (शिक्षा) के बारे में स्पष्ट समझ मुझ में है।

76. – किसी कार्य को करने के लिए किसी दूसरे को ढूंढने से बढ़कर संतुष्टि उस कार्य को स्वयं करने पर मुझे मिलती है।

77. – दूसरों को अपने बोझ को संभालने हेतु सहायता करनेवाले सेवकाई की सराहना मैं करता हूँ।

78. – कलीसिया के कार्यों में शामिल होने के लिए दूसरो को प्रेरणा देना रोमांचित करनेवाली बात है।

79. – कलीसिया की सेवकाई के निमित्त प्रभावकारी योजनाओं का विकास मुझे संतुष्टि प्रदान करता है।

80. – प्रभु के लिए कितनी धनराशी मैं दे सकता हूँ करके देखना मेरे लिए खुशी की बात है।

81. – हस्पताल में बीमारी की हालत में रहनेवाले एक व्यक्ति की सेवा करना मुझे सुकून प्रदान करता है।

82. – बताए गए एक धर्मवैज्ञानिक कथन की सत्यता और त्रुटि के बारे में मैं अच्छे से फैसला दे सकता हूँ।

83. – लोग मुझे ऐसे एक व्यक्ति के रूप में देखते हैं जो विश्वास करता है हर एक बात सम्भव है।

84. – जब सेवकगण कलीसिया में आते हैं तब मैं उन्हें अपने घर भी ले जाना चाहता हूँ।

85. – परमेश्वर की सृष्टि में विभिन्न माध्यमों के द्वारा उनका सुधार और सुन्दरता के लिए जो कार्य मैं करता हूँ उसका नतीज़ा किसी ओर ने न तो देखा है और न विकसित किया है।

86. – दूसरों के प्रभाव और समस्त सेहत प्रार्थनाओं के लिए परमेश्वर के उत्तर पर निर्भर है, इस बात को उनके द्वारा पहचानने के लिए मैं परमेश्वर से विश्वासयोग्यता से प्रार्थना करता हूँ।

87. – मानसिक तथा शारीरिक रूप से पीडित लोगों की सेवकाई में मैं शामिल होना और उनकी चंगाई के लिए प्रार्थना करना चाहता हूँ।

88. – एक नई जगह पर नई कलीसिया के रोपण के बारे में सोचना मेरे लिए उत्साह भरी बात थी।

89. – मण्डली में सेवकों को प्रशिक्षण देने में आनन्द उठाता हूँ।

90. – एक बाइबल क्लास में यदि किसी को बुरा लगे तो भी परमेश्वर के वचन को बाँटना अति आवश्यक है।

91. – मेरे इर्द–गिर्द के सुसमाचार न सुने हुए लोगों के प्रति मुझे बहुत बोझ हैं

92. – लोगों के साथ करीबी रिश्ते में मुझे खुशी है विशेष रूप से एकाएक हो तो।

93. – एक बाइबल क्लास में सिखाने के लिए सामग्रियों को संगठित करना आसान है।

94. – परमेश्वर के स्तुति के गीतों को गाने में या आनन्द अनुभव करने के लिए लोगों की अगुवाई करना व्यक्तिगत तौर से मुझे संतुष्टि प्रदान करता है।

95. – कलीसिया में न जानेवालों को बुलाने से बेहतर एक पापी परिवार को कलीसिया में आमन्त्रित करना मैं पसन्द करता हूँ।

96. – समस्याओं के प्रति मेरे द्वारा दिए जानेवाले समाधानों में मुझे मजबूत भरोसा है।

97. – बाइबल की एक कठिन पुस्तक को पढ़ना तथा अध्ययन करना एक चुनौतीपूर्ण उत्तेजना है।

98. – किसी का ध्यान बटोरे बिना मैं कार्य करना चाहता हूँ।

99. – यदि कोई परिवार गम्भीर समस्या से होकर गुज़र रहा है तो उनकी सहायता करना मुझे अच्छा लगता है।

100.– एक कार्य को पूरा करने के लिए दूसरों का सहयोग मुझे संतुष्टि प्रदान करता है।

101.– एक झुण्डको एक निर्णय में राजी कराने की बजाय मैं स्वयं निर्णय ले लेता हूँ।

102.– मुझे पता है कि परमेश्वर मेरी आवश्यकताओं को पूरी करेंगे इसलिए मैं उदातरता से दे सकता हूँ।

103.– अपने घरों में कैद रहनेवाले लोगों के पास जाना एक विशेष सन्तोष प्रदान करता है।

104.– मैं अक्सर एक व्यक्ति के शब्दों में छिपे हुए उद्येश्यों को खोजता हूँ।

105.– हताश लोगों को सकारात्मक दर्शन प्रदान करने में मुझे सुकून मिलता है।

106.– ऐसा लगता है कि मेरे घर में आने के लिए लोग तत्पर रहते हैं।

107.– चित्र बनाने में, अभिकल्प करने में और विभिन्न चीज़ों में रंग भरने में एक अलगा सा सुख है।

108.– मुझे कुछ ओर कार्य करने के समय पर स्वयं को प्रार्थना में समय व्यतित करते हुए पाता हूँ।

109.– मैं महसूस करता हूँ कि एक बीमार व्यक्ति के लिए मेरी प्रार्थना उस व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन में प्रभाव डालती है।

110.– सबसे प्रमुख बात यह है कि हर एक जाति से और राष्ट्र से लोगों को प्रभु के लिए जीतते हुए देखना चाहता हूँ।

मुबारक हो, आपने आत्मिक वरदान मूल्याकंन जाँच को पूरा किया है! कृप्या एक ओर मिनट के लिए बारीक जाँच करें कि आपने कोई भी प्रश्न को उत्तर दिए बिना छोड़ा नहीं हैं।

अभी आपके उत्तर को एक विशलेषण पन्ना में ले आएं। इसे करने के लिए आपके प्रत्येक प्रश्न के उत्तर की ओर आप को देखना होगा।

विशलेषण पन्ना में दिए गए बाक्स में इन 110 प्रश्नों के संख्यायुक्त उत्तर को प्रश्न के सामने उल्लेख करें। और क्षितिज रेखा में पाए जानेवाली संख्याओं को जोड़कर उन्हें कुल बाक्स में उल्लेख करें। एक उदाहरण निम्नलिखित है :

प्र	उत्त	प्र	उत्त	प्र	उत्त	प्र	उत्त	प्र	उत्त	कुल	दर्जा	आत्मिक वरदान
1	1	23	3	45	0	67	1	89	3	8	2	प्रेरित
2	3	24	1	46	1	68	0	90	1	6	3	भविष्यद्वक्ता
3	3	25	5	47	3	69	5	91	1	17	1	सुसमाचार प्रचारक

अब, सारे कुल को देखें। सबसे ज्यादा कुल जिसमें है वह आपके जबरदस्त आत्मिक वरदान होंगे। कई लोगों के पास कई एक–से कुल के साथ कई आत्मिक वरदान होंगे। यह मूलयाकंन जाँच सिद्ध नहीं है, इसलिए कई बार आपकी जबरदस्त आत्मिक वरदानों को सर्वाधिक कुल भी नहीं मिलता है। अन्त में आप के पास आत्मिक वरदानों की एक सूची उपलब्ध होगी जिसके बाइबलीय पद भी मौजूद होंगे।

यह आत्मिक वरदान मूल्याकंन जाँच आप ऑन–लाईन में भी देख सकते हैं

http://www.kodachrome.org/spiritgift

आत्मिक वरदान विशलेशण पन्ना

जबतक आप जाँच को पूरा नहीं कर लेते हैं तबतक इस पन्ना को न देखें

प्र	उत्त	प्र	उत्त	प्र	उत्त	प्र	उत्त	प्र	उत्त	कुल	दर्जा	आत्मिक वरदान
1		23		45		67		89				प्रेरित
2		24		46		68		90				भविष्यद्वक्ता
3		25		47		69		91				सुसमाचार प्रचारक
4		26		48		70		92				पासबान
5		27		49		71		93				शिक्षक
6		28		50		72		94				संगीत
7		29		51		73		95				उपदेश
8		30		52		74		96				बुद्धि
9		31		53		75		97				ज्ञान
10		32		54		76		98				सेवा
11		33		55		77		99				सहायता
12		34		56		78		100				अगुवाई
13		35		57		79		101				शासन
14		36		58		80		102				देना
15		37		59		81		103				दया
16		38		60		82		104				परख
17		39		61		83		105				विश्वास
18		40		62		84		106				पहुनाई
19		41		63		85		107				निपुणता
20		42		64		86		108				मध्यस्थक
21		43		65		87		109				चंगाई
22		44		66		88		110				मिशनरी

आत्मिक वरदानों की सूची

प्रेरित

यह एक ऐसा वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को वचन की उद्‌घोषणा तथा खरी शिक्षा देने के द्वारा परमेश्वर की कलीसियाओं की अगुवाई करने, प्रेरणा देने और विकसित करने के लिए नियुक्त करता है। देखिए प्रेरित. 12:1–5, 14:21–23।

भविष्यद्वक्ता

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को प्राप्त परिस्थिति में परमेश्वर के प्रकाशन की व्याख्या करने और लागू करने का अधिकार देता है। देखिए 1कुरि. 14:1–5, 30–33, 37।

सुसमाचार प्रचारक

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को अविश्वासियों के साथ सुसमाचार प्रचार करने के लिए सक्षम बनाता है जिसके द्वारा वे अविश्वासी यीशु मसीह के शिष्य बन जाता है। देखिए प्रेरित. 8:26–40

पासबान

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को एक झुण्ड विश्वासियों के आत्मिक कल्याण की जिम्मेवारी देता है। देखिए 1 पत. 5:1–11

शिक्षक

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को परमेश्वर के वचन की सत्यता को संचारित करने के लिए नियुक्त करता है ताकि दूसरे सीख सकें।

संगीत

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को विभिन्न प्रकार के संगीत के द्वारा परमेश्वर की स्तुति करने तथा स्थानीय मण्डली में आराधना के अनुभव को बढ़ाने के लिए सक्षम बनाता है। देखिए 1कुरि. 14:26; मर. 12:36

उपदेश

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को ज़रूरत में रहनेवाले सह–मसीहियों के करीब रहने और तस्सली, सलाह और प्रोत्साहन देने के लिए सामर्थ देता है ताकि उन्हें महसूस हो कि उनकी सहायता करनेवाले भी हैं। देखिए प्रेरित. 11:23–24; 14:21–22

बुद्धि

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को परमेश्वर की मर्जी और कार्य की समझदारी का दान प्रदान करता है क्योंकि यह जीवन व्यतित करने के साथ सम्बन्ध रखता है। देखिए याकू. 3:13–17

ज्ञान

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को परमेश्वर की वचन की महान सच्चाई को अनोखे तरीके से समझने में सहायता करता है और जिसके द्वारा उन्हें कलीसिया की हलात के अनुसार सम्बन्धता में लाया जाए। देखिए इफि. 3:14–19

सेवा

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को दूसरों के बोझ को उठाने में और उनकी सहायता करने में सामर्थ प्रदान करता है कि वे अपने कार्यो को प्रभावशालीरूप से करने में सक्षम हो सकें। देखिए गल. 6:1–2

सहायता

यह ऐसा एक आत्मिक वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को दूसरों के बोझ को उठाने में और उनकी सहायता करने में सामर्थ प्रदान करता है कि वे अपने कार्यो को प्रभावशालीरूप से करने में सक्षम हो सकें। देखिए प्रेरित. 6:2–4

अगुवाई

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को कलीसिया के कार्यो को प्रभावशालीरूप से करने के लिए दूसरों को प्रेरणा देने, मार्गनिर्देशन देने और उत्सुक बनाने में सक्षम बनाता है ताकि दूसरे विश्वासी स्वयं सेवक के रूप में एकता के बन्धन में उस कार्य को अंजाम दे सकें। देखिए इब्रा. 13:7; न्या. 3:10; निर्ग. 18:13–16।

शासन

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को कलीसिया की सेवकाई के दिए गए एक भाग के लक्ष्य को समझने और उस क्षेत्र की ओर प्रभावशालीरूप से दिशा दिखाने के लिए सामर्थी बनाता है। देखिए प्रेरित. 12:12–21

दान देना

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को सवतन्त्रता से, खुशी से और स्वेच्छा से कलीसिया के कार्य के लिए भौतिक भलाईयों में से देने के लिए सामर्थ प्रदान करता है। देखिए 2कुरि. 8:1–5

दया

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को दु:ख–दर्द में रहनेवालों के प्रति तरस खाने की सामर्थ प्रदान करता है ताकि वे उन कष्टों को कम करने के लिए अपने भरपूर समय और शक्ति को अलग कर सकें। देखिए लूका. 10:30–37

परख

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों के आचरणों को परमेश्वर की ओर से है या शैतान की ओर से है करके सुनिश्चित करने का सामर्थ प्रदान करता है। देखिए प्रेरित. 5:3–6; 16:16–18।

विश्वास

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को परमेश्वर के वायदे, शक्ति और उपस्थिति के बारे में असाधारण विश्वास उपलब्ध कराता है ताकि वे कलीसिया के भविष्यात्मक कार्य के लिए ठोस कदम उठा सकें। देखिए इब्रा.11

पहुनाई

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को दूसरे लोगों के लिए अपने घर की द्वार को खोलने में सामर्थ प्रदान करता है और वे स्वेच्छा से आवास, भोजन और संगति प्रदान करते हैं। देखिए उत. 18:1–15

निपुणता

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को रचनात्मक तरीके से परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने के लिए अपने हाथ तथा मन को उपयोग करने के लिए समर्थ देता है। देखिए निर्ग. 28:3–4

मध्यस्थता

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को परमेश्वर के राज्य के निर्माण के लिए लम्बे समय तक प्रार्थना करने के लिए सामर्थ प्रदान करता है। देखिए 1थिस्स. 3:10–13; 1तिमु. 2:1–2

चंगाई

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसमें पवित्रात्मा कुछ मसीहियों को बीमारों की सेहत को ज्यों की त्यों करने को सामर्थ देता है। देखिए याकू. 5:13–16; लूका. 9:1–2

मिशनरी

यह ऐसा एक विशेष वरदान है जिसे पवित्रात्मा स्थानीय कलीसियाओं में से कुछ मसीहियों को अन्य आत्मिक वरदानों के साथ दूसरे किसी संस्कृति या समाज में सेवा करने हेतु देता है। देखिए 1कुरि. 9:19–23

अध्याय 6

लोगों का प्रबन्धकदल

''जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो।''

लूका. 6:31

सुनहरा नियम। ऐसा लगता है कि यह नियम हम में से हर एक जानता है परन्तु अधिकतर समय इसे हम पालन नहीं करते हैं। कलीसिया एक आदान प्रदान की जगह है जो कि आपसी सम्बन्धों पर आधारित है – परमेश्वर और अन्य लोगों के साथ। एक दूसरे के साथ और परमेश्वर के साथ मेल मिलाप में रहने के सिद्धान्त को यीशु ने सिखाया और संसार को उनके प्रेम को दर्शाया जिस के लिए वो मरे थे। जब आप लोगों का प्रबन्धकदल करते हैं, तब आप उनके साथ एक सम्बन्ध में हैं, न कि उनके ऊपर अधिकार ज़माने की पद्वी पर। लोगों के प्रबन्धकदल का अर्थ यह नहीं कि वे आपके लिए क्या कर सकते हैं करके कहना, बल्कि उनसे आप पूछ रहे है कि आप उनके लिए क्या कर सकते हैं। जिस प्रकार यीशु ने हमें वह सुनहरा नियम सिखाया उसी प्रकार हमारे दैनिक जीवन में उसे काम में लाना है। इस अध्याय में लोगों के प्रबन्धबदल का महत्व, प्रबन्धबदल के कुछ सिद्धान्त और प्रबन्धकदल कैसे किया जाए इस विषय पर ध्यान करेंगे।

1. लोगों का प्रबन्धबदल इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

    1. क्योंकि कलीसिया में लोग ही होते हैं

        ''पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज–पद्धारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसका गुण प्रगट करो। '' 1पत. 2:9

        - कलीसिया एक इमारत नहीं है परन्तु लोग हैं
        - हमारा ध्यान लोगों पर है न कि सामग्रियों पर
        - यह केवल आपसी सम्बन्धों के बारे में है
            - ✓ परमेश्वर के साथ
            - ✓ मसीह के साथ
            - ✓ एक दूसरे के साथ

    2. कलीसिया के महान संसाधन लोग हैं

        - लोग है कलीसिया की भरपूर सम्पत्ति
        - लोग कलीसिया में अनेक वरदान और कौशल को ले आते हैं

            ''किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।'' 1कुरि. 12:7

            - ✓ सेवकाई के लिए आत्मिकवरदान
            - ✓ सेवा के लिए कौशल
        - लोगों में लागत लगाना अत्यधिक प्रतिफल लाता है

3. सेवकाई लोगों के द्वारा पूरी की जाती है

''और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमश्वेर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।'' 1कुरि. 12:6

- ○ लोगों के लिए लोगों के द्वारा सेवकाई की जाती है
- ○ बाकि सामग्रियाँ लोगों की सहायता के लिए उपयोग करनेवाली वस्तुएं हैं
- ○ यीशु की सेवकाई लोगों के हृदय के प्रति थी

4. कलीसिया के सदस्य स्वयंसेवक हैं, न कि कर्मचारी

- ○ स्वयंसेवकों को प्रेरणा की आवश्यकता है
  - ✓ उन्हें महसूस होना है कि उन्हें परमेश्वर की ओर से अगुवाई है
  - ✓ उत्साहरहित का अर्थ है उद्येश्यरहित अर्थात् लोग रहित।
- ○ स्वयंसेवकों को प्रोत्साहन की आवश्यकता है
  - ✓ स्वयंसेवक जो कर रहे हैं उसके प्रति उन्हें आश्वासन की आवश्यकता है
  - ✓ स्वयंसेवकों को भूतकाल की कठिनाईयों में काम करने की आवश्यकता है
- ○ स्वयंसेवकों को जागृत करने की आवश्यकता है
  - ✓ उन्हें तन्ख्वाह नहीं देते है सो उन्हें आगे की ओर बढ़ते रहने के लिए कुछ बातों की आवश्यकता है।
  - ✓ उन्हें सुसमाचर के द्वारा जागृत करते रहना चाहिए।

5. संघर्ष को टालने के लिए

- ○ साधारणरूप से एक कलीसिया में लोगों के बीच में संघर्ष हाता है
- ○ इसलिए संघर्ष की परिस्थितियों में लोगों को सम्भालना सीखना आवश्यक है

2. लोगों के प्रबन्धकदल के सिद्धान्त

1. लोग <u>अनन्य</u> है

''मेरे मन का स्वामी तो तू है; तू ने मुझे माता के गर्भ में रचा।'' भजन. 139:13

- उनके पास अनन्य कौशल है
- उनके पास अनन्य अनुभव है
- उनके पास अनन्य विचार है
- उनके पास अनन्य व्यक्तित्व है

2. लोग <u>सम्बन्धित रहना</u> *चाहते* है

- लोग किसी चीज़ का एक भाग होना पसन्द करते हैं
- लोग साधारण रीति से अकेले रहना पसन्द नहीं करते हैं

  ''फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मै उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उस से मेल खाए।'' उत. 2:18

  - यीशु ने संगति के प्रति हमारी आवश्यकता को पहचाना

3. लोग <u>भाग लेना</u> चाहते हैं

  - लोग दर्शक बनकर रहने से बढ़कर सहभागी बनना चाहते हैं
  - लोग अपना सहयोग देने के इच्छुक हैं
  - जहाँ आवश्यकता है वहाँ लोग अपने हुनर और वरदान को उपयोग करना चाहते हैं

4. लोग <u>चाहते है कि उन्हें मूल्यवान समझें</u>

- लोग स्वयं को उपयोगी महसूस करना चाहते हैं

  ''मैं अपने बच्चे उनेसिमुस के लिये जो मुझ से मेरी कैद में जन्मा है तुझ से बिनती करता हूं। वह तो पहिले तेरे कुछ काम का न था, पर अब तेरे और मेरे दोनों के बड़े काम का है'' फिलेमोन. 1:10–11

- यदि हम लोगों को मूल्य दें तो वे स्वयंसेवक बनेंगे।

5. लोग <u>चाहते हैं कि उनका आदर</u> करें

''सब का आदर करो'' 1पत. 2:17

- लोग चाहते हैं कि मान–मर्यादा के साथ उनके साथ बर्ताब करें
- परमेश्वर के लिए लोग महत्वपूर्ण हैं, सो हमें उन्हें महत्वपूर्ण गिनना चाहिए।

6. लोग <u>चाहते है कि उनका सम्मान</u> करें

''और मैं स्तिफनास और फूरतूनातुस और अखइकुस के आने से आनन्दित हूं, क्योंकि उन्हों ने तुम्हारी धटी को पूरी की है। और उन्हों ने मेरी और तुम्हारी आत्मा को चैन दिया है इसलिये ऐसों को मानो।।'' 1कुरि. 16:17–18

- लोगों की प्रशंसा करनी चाहिए
- सम्मान के द्वारा विश्वास बढ़ता है।

7. लोग <u>मार्गनिर्देशन चाहते</u> हैं।

- दर्शन बाँटो
    - एक अगुवा होने के नाते आपको चाहिए कि आप दूसरों को उत्तेजित और प्रेरित करें।
    - समस्त लक्ष्यों पर प्रत्येक का ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास करें

      "जहां दर्शन की बात नहीं होती, वहां लोग निरंकुश हो जाते हैं," नीति. 29:18
- प्रयासों को निर्देशांक करें
    - इस बात को सुनिश्चित करें कि सब मिलकर कार्य कर रहे हैं
    - आपको जिन कार्यों के बारे में जानकारी नहीं है और जो बातें कलीसिया के दर्शन और लक्ष्य के साथ मेल नहीं खाती हैं उनकी अनुमति न दें
- सबसे प्रभावकारी नेतृत्वशैली का प्रयोग करें
    - विभिन्न परिस्थिति की अवश्यकता के अनुसार विभिन्न शैलियों का प्रयोग करें
    - आवश्यकता के अनुसार उतरदायित्व और कार्यों को सौंपें

8. लोग सूचना चाहते हैं।

- आप अपने लक्ष्य और प्रतिक्षाओं को संचारित करें
    - सुनिश्चित करें कि हर कोई अपनी भूमिका को समझ रहें है
    - कल्पना नहीं करना कि लोग किसी बात के बारे में जानते हैं, उनसे कहें
- हर एक प्रासंगिक सूचना को बाँटे

3. लोगों का प्रबन्धकदल कैसे किया जाए

बेहतरीन तरीके से लोगों के प्रबन्धकदल के लिए कुछ बुनियादी कदम निम्नलिखित हैं :

कदम 1 : उन्हें शामिल करे

- सहभागी होने के लिए उन्हें निमन्त्रण दें
- उनके आत्मिकवरदानों को प्रयोग करने के लिए उन्हें प्रोत्सहित करें

कदम 2 : उनका आदर करें

- उनके निवेश की महत्व दें
- उनकी राय के बारे में पूछें

कदम 3 : उन्हें प्रशिक्षित करें

- उनकी कुशलता और हुनर को विकसित करने के लिए उन्हें सहायता करें

- उन्हें प्रशिक्षण के लिए भेजें या आप स्वयं उन्हें प्रशिक्षित करें

कदम 4 : उन्हें पहचानें

- उनके योगदान के प्रति आभार व्यक्त करें
- उनके द्वारा पूरे किए गए कार्यों का श्रेय उन्हें दें

कदम 5 : उन्हें पुरस्कार दें

- छोटे से तोहफे के द्वारा आपकी प्रशंसा व्यक्त करें
- भोजन या एक प्याला चाय के लिए उन्हें आमन्त्रित करें

4. विभिन्न प्रकार की कलीसिया सेवकों की प्रबन्धकदल

1. सवेतन कलीसिया कार्यकर्ताओं के प्रबन्धकदल

- वे आपकी सेवकाई दल के सदस्य हैं इसलिए उनके साथ अच्छा व्यवहार करे और उनका अच्छा भरण करें
- आपको चाहिए उन्हें जिम्मेवारियाँ सौंपे न कि कोई गतिविधियाँ।
- प्राथमिकता दल के कार्य के लिए, इसलिए आप को चाहिए कि एक साथ कार्य करने के लिए एकत्रित करें।
- हर एक को उनकी जिम्मेवारी और अधिकार के बारे में स्पष्ट जानकारी की आवश्यकता है।

2. कलीसिया के अगुवों की प्रबन्धकदल

- विशिष्ट क्षेत्र केन्द्र या सेवकाई उनके लिए निर्धारित करें।
- आप अपने अधिकार को बनाए रखें और सबके ऊपर नियन्त्रण रखें
- मार्गनिर्देशन और सहायता उपलब्ध करें
- जारी रहनेवाला प्रशिक्षण उपलब्ध कराएं
- आपकी सेवकाई को अस्त–व्यस्त करनेवालों से सावधान रहें
    - जो अपनी मर्ज़ी से कार्य करना चाहते हों
    - जो आपके अधिकार के आधीन में नहीं रहना चाहते हों

3. स्वयंसेवकों के प्रबन्धकदल

- प्रोत्साहनकर्ता और जागृतक बनें
- उनके लिए स्पष्ट लक्ष्यों को रखें

- कार्यों को पूरा करने की तिथि के साथ सौंपे और उसके पूर्तीकरण के लिए अनुवर्तन करें
- भावी अगुवों को विकसित करने के लिए सलाह मुहैया करें
- नई विचारधाराओं को बढ़ावा दें
- सीधे प्रबन्धकदल के लिए उन्हें किसी अगुवे या कर्मचारी के आधीन करें

लोगों का प्रबन्धकदल – अभ्यास

निर्देश : बाई ओर लिखीं हुई परिस्थितियों हेतु प्रयोग किए जा सकनेवाले उपयुक्त लोगों के प्रबन्धकदल सिद्धान्तों को दहिने ओर लिखें।

परिस्थिति	प्रयोग किए जा सकनेवाले लोगों का प्रबन्धकदल सिद्धान्त
1. कलीसिया का एक सदस्य आपके पास आकर कहता है कि वह आराधना दल में सेवा करना चाहता है।	
2. आपके अगुवों में से किसी ने आपकी कलीसिया के लोगों की सूची उनके आत्मिक वरदानों के साथ माँगी है।	
3. एक परिवार आपकी कलीसिया से यह कहते हुए निकल जाता है कि वे उस कलीसिया में किसी को भी नहीं जानते है।	
4. आपकी कलीसिया के नवजवान उदास हैं क्योंकि संसाधन के प्रति उनके अनुरोध पर कोई भी ध्यान नहीं दे रहे हैं।	
5. आपका बाल–सेवा अगुवा आपके पास आता है कि वे जानें कि उनकी सेवकाई कलीसिया की पूरा योजना में किस प्रकार ठीक बैठती है।	
6. आपकी कलीसिया के सदस्य किसी बड़े परियोजना पर स्वयंसेवा करने पर अरूची प्रकट करते हैं।	
7. कलीसिया के लक्ष्य को किस प्रकार हासिल किया जाए इस पर आपी कलीसिया के दो सदस्यों में असहमति है	
8. काफी समय से आपके बाल–सेवक स्वयंसेवक अचानक उस सेवकाई को करना बन्द कर देते हैं।	

अध्याय 7

संघर्ष का प्रबन्धकदल

"धन्य हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।"

मत्ती. 5:9

हर एक कलीसिया या सेवकाई के अगुवे को यह जानना ज़रूरी है कि लोगों के साथ कार्य करनेवाले किसी भी संगठन में संघर्ष स्वभाविक है। जैसे हमने पहले भी कहा कि, कलीसिया लोगों का व्यवसाय है और यह सम्बन्धों पर आधारित है। परमेश्वर के साथ संघर्ष को पाप कहते हैं। एक दूसरे के साथ का संघर्ष पाप की ओर ले जा सकता है, इसलिए पाप में पड़ने से हमें बचना चाहिए *"जो हमें आसानी से उलझाते हैं"*, जिसका ज़िक्र इब्रा. 12:1 में है। यीशु के पहाड़ी उपदेश, मत्ती. 5:9 में, यीशु ने कहा, *"धन्य हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।"* यीशु हम सबको मेल करानेवाले के रूप में बुलाते हैं, और संघर्ष का होना तय होने के कारण बाइबलीय तरीके से उसके साथ व्यवहार करने के लिए तैयार रहे। इस अध्याय में संघर्ष को निपटाने का महत्व, कारण और श्रोत कौन–कौनसा है, और उसे किस प्रकार पहचानें और समाधान किया जाए इस विषय पर विचार–विर्मश करेंगे।

1. संघर्ष का प्रबन्धकदल सीखना इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

    1. कलीसिया में संघर्ष हमेशा रहता है

        - जब कभी भी आप लोगों के साथ व्यवहार करते है, वहाँ संघर्ष है
        - वहाँ एक निरपेक्ष सत्य है, परन्तु सापेक्षिक समझ है

    2. कलीसिया की अधिकतर परेशानियाँ संघर्ष से सम्बन्धित हैं।

        - वह एक कलीसिया को अपने वश में लेकर विकास को रोक देते हैं
        - छोटे–छोटे संघर्ष बड़ी समस्या बन सकते हैं।

    3. संघर्ष एक कलीसिया को आसानी से विभाजित कर सकता है

        "और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर क्योंकर स्थिर रह सकेगा?" मरकुस. 3:25

        - विरोधी पडाव या विचारधारओं के बनाने के द्वारा
        - आपके अधिकारों को काटने के द्वारा

    4. प्रभावशालीरूप से संघर्ष का प्रबन्धकदल करने के द्वारा एक कलीसिया आगे बढ़ती है

        - विकास की रुकावटों को दूर करते हैं
        - समझदारी का एक आधारभूत सिद्धान्त बनता तथा भविष्य के संघर्ष का संकल्प भी मिल जाता है

2. संघर्ष का श्रोत

1. सदस्यों के बीच में

- विभिन्न दृष्टिकोण
- विभिन्न तर्जुबा
- विभिन्न लक्ष्य और कार्यसूची

2. पासबान और सदस्यों के बीच में

- विभिन्न लक्ष्य
- विभिन्न उद्येश्य
- विभिन्न शैली

3. पारम्परिक और आधुनिक पर्यावलोकन के बीच में

- आकार बनाम स्वतन्त्रता
- आराम बनाम प्रसंग
- स्थिरता बनाम लचकीलापन

4. पीढ़ियों के बीच में

- अब बनाम तब
- जवान बनाम बूढ़ा
- ज़ोरदार बनाम नरम

5. सेवकाईयों के बीच में

- संसाधन के लिए प्रतियोगिता
- लोगों के लिए प्रतियोगिता
- प्रचलित होने के लिए प्रतियोगिता

3. संघर्ष का निमित्त

हर एक संघर्ष के पीछे छिपा हुआ एक कारण होता है, और यह तीन श्रोत से निकलता है

1. शैतान

- वह हमेशा हमें पाप करने के लिए प्रलोभित करते हुए इर्द–गिर्द घूमता है

  ''सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए।'' 1पत. 5:8

2. हमारे पापमय स्वभाव

- हम पाप में जन्मे हैं। यह हमारा स्वभाव है।

  ''क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ।'' गल. 5:17

3. पापमय संसार

- हमारा संसार भ्रष्ट है और हमें भी भ्रष्ट करने का प्रयास करता है।

  ''क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।'' 1यूह. 2:16

4. संघर्ष का कारण

1. प्रार्थना, मनन और चर्चा के बाद एक अस्पष्ट दर्शन या लक्ष्य को निर्धारित करना

- विभिन्न दर्शन और लक्ष्य वाले लोगों के झुण्ड में टक्कर होती है
- वहाँ कोई भी केन्द्रिय दर्शन नहीं हैं

  ''जहां दर्शन की बात नहीं होती, वहां लोग निरंकुश हो जाते हैं,'' नीति. 29:18

2. नीतियुक्त योजना की कमी

- संसाधन को प्राथमिकता देने या विनिधान करने की कोई योजना मौजूद नहीं है
- व्यक्तिगत संसाधनों के लिए लोग प्रतियोगी होते हैं न कि सामूहिक
- वर्तमान समय के संसाधनों के लिए लोग प्रतियोगी होते हैं न कि भविष्य की।
- कलीसिया संसाधनों का कोई संगठन नहीं है।

3. अपर्याप्त शिष्यता

- लोगों को मसीही सिद्धान्तों को नहीं सिखाया गया है
- कलीसिया के नेतृत्वों के द्वारा मसीही महत्व को प्रदर्शित नहीं किया गया है
- बाइबलीय संघर्ष संकल्प के बारे में नहीं सिखाया गया है

4. कमज़ोर संचारण

- अन्य कलीसिया अवश्यकताओं के बारे में अनभिज्ञ हैं
- नियमित रूप से लोग एक दूसरे के साथ संचारण नहीं करते हैं
- संचारण अग्रसक्रिय से बढ़कर प्रति क्रियाशील है

5. समस्याओं के साथ निपटाते नहीं

- भूतपूर्व संघर्षों का समाधान नहीं किया गया
- वर्तमान संघर्षों को नज़रअंदाज करते हैं
- संभावित संघर्षों का पूर्वानुमान नहीं करते हैं

6.संघर्ष को पहचानना

1. स्पष्ट चिन्ह

- जज़्बाती प्रकोप
- लिखित शिकायतें
- चुगली तथा किंवदन्ती

2. अस्पष्ट (चेतावनी) चिन्ह

- कलीसिया के कार्यक्रमों से दूर रहना
- परियोजना स्थगित या देर करना
- कोई संचारण नहीं

7.संघर्ष समाधान

''यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा लिया। और यदि वह न सुने, तो और एक दो जन को अपने साथ ले जा, कि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से ठहराई जाए। यदि वह उन की भी न माने, तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने, तो तू उसे अन्यजाति और महसूल लेनेवाले के जैसा जान।'' मत्ती. 18:15—17

1. <u>जब आप किसी दूसरे के साथ संघर्ष में हैं :</u>

''और जब तू अपनी ही आंख का लट्ठा नहीं देखता, तो अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, हे भाई, ठहर जा तेरी आंख से तिनके को निकाल दूं? हे कपटी, पहिले अपनी आंख से लट्ठा निकाल, तब जो तिनका तेरे भाई की आंख में है, भली भांति देखकर निकाल सकेगा।'' लूका. 6:42

1. पहचानें कि संघर्ष में आपकी गलती कितनी है
   - आप अपने साथ विश्वासयोग्य रहें और संघर्ष के क्षेत्र को पहचानें जिसमें आपकी भूमिका है। (उदा : कठोर शब्द, गन्दी भाषा, चुगली और बेचैनता आदी)
2. पहले आपके द्वारा उत्पन्न संघर्ष को कबूलें और मानें
   - जिसके साथ आपका संघर्ष है उनके पास जाते समय इसी उद्येश्य के साथ जाएं।
3. आपके गलत व्यवहार के लिए माफी माँगे
   - एक बार जिसके साथ आपने बुरा व्यवहार किया है उनसे माफी माँगने के बाद, और कबूलने के बाद, उन लोगों ने आप के साथ क्या किया है उस विषय में आप बात कर सकते हैं।
4. यदि उन्होंने माफ कर दिया तो आपके संघर्ष का समाधान हो गया है।
5. यदि वह आपको माफ नहीं करते हैं तो मत्ती. 18:15–17 के अनुसार एक ओर व्यक्ति को अपने साथ ले लें।

2. आपको एक संघर्ष पर चिंतन करने के लिए बुलाया गया :

1. संघर्ष को पहचानें
   - समस्या को पहचानें, न कि लक्षण को
   - इस बात को सुनिश्चित करें कि जो भी उस में शामिल है वे सब समस्या और कौन किस के लिए जिम्मेवार है इस में सहमत हों। यदि आवश्यकता है तो हर एक गलती को लिख लें ताकि वे एक के बाद एक को माफ कर सके।
2. भागलेनेवालों को पहचानें
   - वास्तव में जो शामिल हैं उसे पहचानें
   - पहचानें कि वे किस प्रकार शामिल हैं (उनके गलतियाँ क्या–क्या है?)
   - निर्धारित करें कि वे किसलिए शामिल हैं
3. बाइबलीय तरीके से हल करें
   - आप जो कुछ भी करें उसमें परमेश्वर को महिमा मिले!
   - प्रत्येक दल अपनी गलतियों को माने (लूका. 6:42)

- प्रत्येक दल माफी माँगे।
- यदि माफ कर दिया है तो संघर्ष का समाधान हो गया।
- यदि माफ नहीं किया तो गवाहों का सहारा लें (मत्ती. 18:15–17 के अनुसार)

4. शान्तिपूर्वक हल करें

   - संघर्ष अवसर प्रदान करता है
   - एक संघर्ष को हल करने के प्रयास में आप पाप न करें
   - अनुमान लगाने के द्वारा बातों को न बिगाड़े। सच को ढूंढें।
   - महान आज्ञाओं को याद करें
     - परमेश्वर को प्रेम करें

       ''उस ने उस से कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।'' मत्ती. 22:37

     - एक दूसरे से प्रेम करें

       ''और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।'' मत्ती. 22:39

8.संघर्ष से पार हो जाना

1. हम अपने ही कार्य के लिए जिम्मेवार हैं

   - बुद्धिमानी से जीएं

     ''इसलिये ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों की नाईं नहीं पर बुद्धिमानों की नाईं चलो।'' इफि. 5:15

   - हृदयों को परिवर्तित करनेवाला एक परमेश्वर ही हैं

     ''तब यहोवा का आत्मा तुझ पर बल से उतरेगा, और तू उनके साथ होकर नबूवत करने लगेगा, और तू परिवर्तित होकर और ही मनुष्य हो जाएगा।'' 1शमू. 10:6

2. माफ करना सामर्थकारी है

   - संघर्षों को पीछे फेंके
   - यीशु के शब्दों में, ''जाओ, ओर पाप न करो''

     ''यीशु ने कहा, मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना।।'' यूह. 8:11

3. मेल करानेवाले बनें

''धन्य हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।'' मत्ती. 5:9

9.संघर्ष हमेशा बुरा नहीं होता।

1. पापरहित संघर्ष होना सम्भव हैं। (एक ही परेशानी के हल के लिए दो प्रकार की विचारधाराएं, एक भले कार्य हेतु एक अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए दोनों एक साथ कार्य करते हैं।)
2. किसी बात पर ध्यान देना चाहिए ऐसी बातों को संघर्ष के द्वारा पहचाना जा सकता है। (प्रक्रिया जिसे अच्छे बनाना चाहिए या गतिविधी जिसे ओर भी परिभाषित करना आवश्यक है।)

संघर्ष निवारण – अभ्यास

कलीसियाई संघर्ष के उदाहरण	सम्भावित समाधान
1. आपके जवानों की सेवकाई के नेतृत्व, उन्हें दी गई सामग्री तथा स्थान से नाराज़ हैं और वे ओर भी माँग कर रहें हैं	
2. कलीसिया की एक नई दिशा के बारे में पासबान की ओर से लिए हुए निर्णय से आपके परिषत के सदस्य असहमत हैं।	
3. आपकी मण्डली के कुछ बड़े–बुजूर्ग लोग आपके द्वारा आराधना के लिए उपयोग किए जानेवाले नए गीतों के बारे में शिकायत करना आरम्भ करते हैं और वे चाहते हैं कि आप ''पुराने गीतों'' को प्रयोग करें।	
4. आपकी मण्डली के दो परिवार ज़मीन के प्रति कानूनी कार्यवाही आपस में कर रहे हैं और आप इस बात को देख रहे हैं कि आपकी कलीसिया के लोग किनारे हो रहे हैं	
5. आपकी आराधना में अगुवे के बारे में एक कानाफूसी चल रही है कि किसी के साथ उनका अनैतिक सम्बन्ध है।	

अध्याय 8

शिष्य बनाना

''इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो।''

मत्ती. 28:19

यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ एक रिश्ता बनाने हेतु लोगों को आकर्षित करने के लिए कलीसिया की स्थापना इस धरती पर की गई। *''परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए''* (यूह. 3:17) कलीसिया के अगुवे होने के नाते कलीसिया का प्रबन्धकदल नहीं है हमारी प्राथमिकता, बल्कि दूसरों को मसीह की ओर अगुवाई करना है। इसे हम शिष्यता कहते हैं। चाहे हम प्रचार करें, शिक्षा दें, सुसमाचार फैलाएँ या आराधना करें इसके द्वारा हमारा उद्येश्य यह होना अनिवार्य है कि ''दूसरो के जीवनों में मसीह उत्पन्न हो जाएं''(गल. 4:19)। इस अध्याय में हम शिष्यता, इसके उद्येश्य, सिद्धान्त तथा प्रक्रिया और जारी रहनेवाले मूल्यांकन की आवश्यकता के बारे में विचार–विमर्श करेंगे।

शिष्यता और शिक्षा के बीच में क्या भिन्नता है?

- ज्ञान और सूचना को हस्तांतरित करने को शिक्षा कहते हैं। यह जानने के बारे में है।
- उस ज्ञान और सूचना को लागू करने को शिष्यता कहते हैं। यह करने के बारे में है।

1. शिष्यता का उद्येश्य

    1. दूसरों में मसीह के रूप बनते हुए देखने के लिए

        ''हे मेरे बालकों, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जच्चा की सी पीड़ाएं सहता हूं।'' गल. 4:19

        - यह ही कलीसिया का लक्ष्य है
        - खोया हुआ एक बालक मिल जाने से स्वर्ग में आनन्द मनाते हैं!

            ''इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साम्हने आनन्द होता है।।'' लूका. 15:10

    2. दूसरों में आत्मिक वरदानों को विकसित करने के लिए

        ''सब के लाभ पहुंचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।'' 1कुरि. 12:7

        - आपके सदस्यों के बीच में जो आत्मिक वरदान पहले से है उसे बाहर ले आने के लिए
        - आपके सदस्यों के पास जो आत्मिक वरदान पहले से है उसे उपयोग करने के लिए

3. दूसरों को सेवकाई के लिए प्रशिक्षित तथा तैयार करने के लिए

''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।।'' 2तिमु. 3:16–17

- कलीसिया के सदस्यों के मध्य में सेवकाई के लिए
- कलीसिया के बाहर रहनेवालों के मध्य में सेवकाई के लिए

4. कलीसिया की उपज को उत्पन्न करने के लिए

- शिष्य दूसरा शिष्य बनाता है

  ''इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ'' मत्ती. 28:19

- आपकी सेवकाई को ओर भी लोगों तक पहुँचाने के लिए

5. अन्य अगुवों के विकास के लिए यह एक पूर्वापेक्षा है

- सम्भावित अगुवों को सर्वप्रथम शिष्य बनाना चाहिए
- अगुवों के लिए एक मजबूत विश्वास एक गम्भीर कसौटी है

2. शिष्यता के सिद्धान्त

1. शिष्यता का अन्त कभी नहीं होता

''इसलिये आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर, हम सिद्धता की ओर बढ़ते जाएँ,'' इब्रा. 6:1

- कभी कोई स्नातक नहीं बनता
- मंज़िल जितनी महत्वपूर्ण है उतना सफर भी

2. यह कलीसिया की सर्वप्रथम प्राथमिकता है।

''इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ'' मत्ती. 28:19

- कलीसिया की स्थापना इसलिए ही हुई है
- कलीसिया के भीतर जो कुछ भी है वे सब इस से फायदा प्राप्त है
    - जैसे लोगों को शिष्य बनाते जाते है वैसे वे अधिक सेवा करेंगे
    - जैसे लोगों को शिष्य बनाते जाते है वैसे वे सेवकाई में शामिल होते जाएंगे
    - जैसे लोगों को शिष्य बनाते जाते है वैसे वे कलीसिया के लिए अधिक देना आरम्भ करेंगे

3. शिष्यता के लिए समय लगता है

- यह काम एक ही रात में या चुटकी बजाते नहीं होता है
- आप पहाड़ पर किस प्रकार चढ़ते हैं? – एक समय में एक कदम।

4. शिष्यता के लिए मेहनत की आवश्यकता है

- लोगों को सहयोग की आवश्यकता है
- लोगों को प्रोत्साहन की आवश्यकता है
- लोगों को जवाबदेही की आवश्यकता है

5. शिष्यता के लिए लोगों की आवश्यकता है

- आपके सदस्यों को शिष्य बनाने में आपकी सहायता करनेवालों की एक सूची बनाएं
- गवाही सबसे प्रभावशाली हथियार है
- हर एक मसीही को अपने साथ चलनेवाले किसी भाई या बहन की आवश्यकता है

  '' क्योंकि यदि उन में से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा'' सभो. 4:10

6. शिष्यता के लिए इच्छा की आवश्यकता है

- आपको चाहिए कि ''दूसरों में मसीह के रूप बनते हुए देखे'' – गल. 4:19
- हमारे विश्वास में बढ़ने की इच्छा हमें होनी चाहिए

  ''परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा'' – याकू. 4:8

3. शिष्यता की प्रक्रिया

क. शिष्यता के चिन्ह कौन–कौनसे हैं?

1. <u>विश्वास</u>

''क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।'' 2कुरि. 5:7

- एक शिष्य विश्वास में चलता है
- एक शिष्य परमेश्वर पर भरोसा रखता है
- विपत्ति के समय में भी एक शिष्य अपने विश्वास को घेरे रहता है

2. <u>आराधना</u>

''उस ने उस से कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।'' मत्ति. 22:37

- एक शिष्य परमेश्वर के परमाधिकार को स्वीकारता है
- एक शिष्य हमेशा महिमा परमेश्वर को देता है!
- एक शिष्य आराधना में लगातार आता है

3. बाइबल अध्ययन

''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।।'' 2तिमु. 3:16–17

- एक शिष्य परमेश्वर के रास्ता को हमेशा सीखता है
- एक शिष्य परमेश्वर के ज्ञान की चाहत रखता है
- एक शिष्य उत्तर के लिए परमेश्वर के वचन में देखता है

4. <u>प्रार्थना</u>

''निरन्तर प्रार्थना मे लगे रहो।'' 1थिस्स. 5:17

- एक शिष्य परमेश्वर के साथ हर दिन बातें करता है
- एक शिष्य आत्मा में जीवन व्यतित करता है
- एक शिष्य अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा को खोज निकालता है

5. सेवा

''सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।।'' 1कुरि. 15:58

- एक शिष्य मसीह की देह की सेवा करता है
- एक शिष्य दूसरों की सेवा पहले करता है
- एक शिष्य मसीह के आदर्श का पीछा करता है

6. मिशन और गवाही

''परन्तु जब पवित्रात्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।'' प्रेरित. 1:8

- एक शिष्य परमेश्वर ने की हुई बातों को दूसरों से कहता है

- एक शिष्य परमेश्वर जहाँ की ओर अगुवाई करते है वहाँ की ओर जाता है
- एक शिष्य दूसरे शिष्य को बनाता है

ख. एक शिष्यता पद्धती का प्रतिपादन करना

1. शिष्यता के लिए चन्द लक्ष्यों को विकसित करना
2. सम्भावित अगुवे तथा शिक्षकों को पहचानें
3. अग्रसक्रिय तथा साभिप्राय रहें
4. शिष्यता के लिए एक नीति अपनाए, इस प्रकार निम्नलिखित हैं :

कदम 1 : आराधना के लिए निमन्त्रण

- यह सबकुछ आराधना में आने के लिए दिया जानेवाले निमन्त्रण से आरम्भ होता है
- वे पवित्रात्मा की अपस्थिति को अनुभव करें
- एक विशेषरूप से पवित्रात्मा उन्हें छूने के लिए प्रार्थना करें
- जैसे वे पवित्रात्मा के स्पर्श को महसूस करते हैं वैसे उन्हें उत्साहित करें कि वे मसीह को ग्रहण करें
- उन्हें प्रोत्साहित करें कि वे अपने विश्वास का सार्वजनिक प्रगटीकरण करें

कदम 2 : बाइबल अध्ययन में उन्हें शामिल करें

- उन्हें एक औपचारिक बाइबल अध्ययन में जुटाएं
    - मसीही बुनियादी बातें उन्हें सिखाएं
    - विश्वास में जीवन बिताना सिखाएं
    - बाइबलीय विश्वदर्शन सिखाएं
- दैनिक व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन का प्रोत्साहन करें

कदम 3 : प्रार्थना जीवन को प्रोत्साहित करें

- प्रार्थना प्रशिक्षण उपलब्ध कराएं
- प्रार्थना सेवकाई में उन्हें शामिल करें

कदम 4 : <u>सेवा में</u> उन्हें शामिल करें

- उन्हें चाहिए कि वे कलीसिया में सेवा करें
    - कलीसिया के एक सदस्य होने के नाते उन्हें चाहिए कि वे उसकी सहायता करें
    - मसीह की देह में सदस्य होने के नाते वे अधिदेशाधीन है
- उनकी काबिलियत के अनुसार उन्हें सेवा करने दो
    - उनके पास जो आत्मिकवरदान है उसके अनुसार
    - ओर निपुणता तथा कौशलता जो उनके पास है उसके अनुसार

कदम 5 : लोगों को सेवकाई में जोडें

- सेवकाई के अवसर को प्रस्तुत करें
    - प्रादेशिक
    - राष्ट्रीय
    - अर्न्त–राष्ट्रीय
- सुसमाचार प्रचार का प्रशिक्षण उपलब्ध कराएं
    - गवाही तैयार करें
    - जिन लोगों के बीच में वे इस गवाही को बाँटने जा रहे हैं उनकी सूची बनवाएं
- कलीसिया या सेवकाई के नेतृत्व के लिए उन्हें प्रशिक्षण करें

कदम 6 : लोगें को केवल शिष्य बनकर रहने से <u>दूसरों को शिष्य बनानेवाले</u> बनाएं

ग. चालू मूल्यांकन

- शिष्यता की प्रगति का वार्षिक मूल्यांकन करें और इन प्रश्नों को पूछें :
    1. शिष्यता की प्रक्रिया में कितने लोग सजीवता में शामिल हैं?
    2. हमें सफलता कहाँ प्राप्त हो रही है?
    3. क्या व्यक्तिगतरूप से हमारे सदस्य बढ़ रहे हैं?
    4. कलीसिया के लिए क्या यह फल ला रहे हैं? और व्यक्तियों के लिए?
    5. इससे हमारी कलीसिया में क्या प्रभाव हो रहा है? और समाज में?

- आवश्यकता के अनुसार समायोजन करें
    - सफल कक्षा या पाठ्यक्रम में सहभगिता को प्रोत्साहित करें

○ दूसरों को प्रोत्साहित करने के लिए गवाहियों का उपयोग करें

शिष्य बनाना – अभ्यास

निर्देश :नीचे दिए गए मानचित्र को आपके सुझाव और विचारों के द्वारा पूरा करें कि एक कलीसिया के भीतर शिष्यता के प्रत्येक स्तर को पूरा करने के लिए किस प्रकार की विषयों की आवश्यकता है।

- नए विश्वासी : स्तर 1 (विश्वास का आरम्भ)

1. परमेश्वर कौन हैं?	5.	9.
2. बपतिस्मा	6.	10.
3. प्रभु–भोज	7.	11.
4. बाइबल का सामान्य विवरण	8.	12.

- मौलिक विश्वासी : स्तर 2 (विश्वास का नींव)

1. सृष्टि–उत्पत्ति	5.	9.
2. आत्मिक वरदान	6.	10.
3. मसीही जीवन – नए नियम	7.	11.
4. त्रिएकता	8.	12.

- स्थिर विश्वासी : स्तर 3 (विश्वास की विकास)

1. पुराने नियम का इतिहास	5.	9.
2. शैतान और दुष्टता	6.	10.
3. विश्वास – इब्रानियों	7.	11.
4. आत्मिक विकास	8.	12.

- पक्का विश्वासी : स्तर 4 (विश्वास कार्यार्थ है)

1. वचन को सिखाना	5.	9.
2. सेवकाई के नेतृत्व	6.	10.
3. मिशन	7.	11.
4. अन्तिम समय – प्रकाशितवाक्य	8.	12.

भाग 3 :

साधन का प्रबन्धकदल

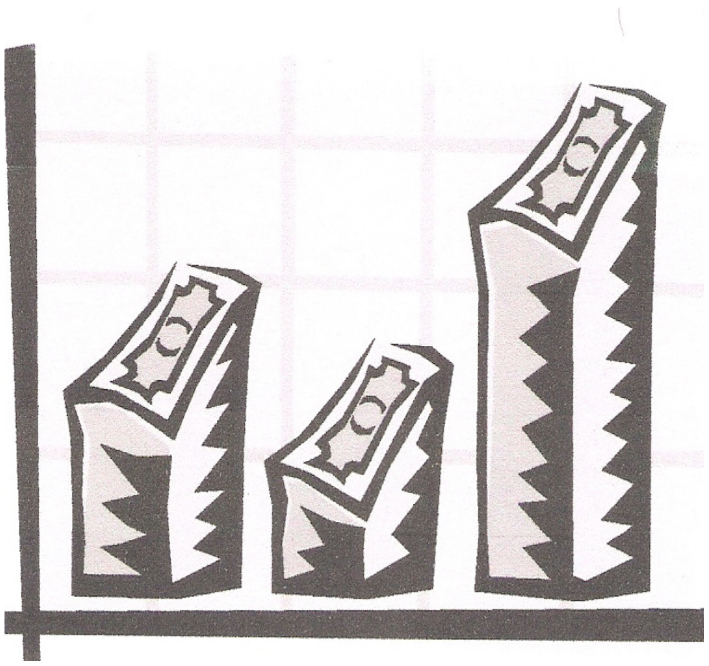

अध्याय 9

नीतियुक्त योजना

''तुम में से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो, और पहिले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की बिसात मेरे पास है कि नहीं? कहीं ऐसा न हो, कि जब नेव डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें।''

लूका. 14:28—29

कलीसिया नेतृत्व में योजना एक महत्वपूर्ण तत्व है। कालिफॅर्निया के क्रिस्टल कथीडरल का पासबान तथा लेखक रॉबर्ट स्कल्लर इस प्रकार कहता है, *''जो योजना बनाने में पराजित होता है वह पराजित होने के लिए योजना बना रहा है।''* स्पष्टरूप से परिभाषित की गई योजना एक कलीसिया को अपने संसाधन को संगठित करने में और उन्हें सही से लागू करने में सहायता करता है जिसके द्वारा वे अपने दर्शन को पा सकते हैं। योजना के बिना कलीसिया अपने सीमित संसाधन और बहुमूल्य समय को बरबात कर रही है और वे अपरिहार्य रूप से परमेश्वर ने जिस काम के लिए उन्हें बुलाया था उस में से वंचित रह जाता है। एक योजना कभी भी एक कलीसिया को कही गई बातों को करने में मज़बूर नहीं करता परन्तु यह ऐसी एक नींव का निर्माण करता है जहाँ कलीसिया अपनी सम्पत्ती को नीतियुक्तरूप से अधिक मात्रा में प्रभावकारी बनाती है। इस अध्याय में हम नीतियुक्त योजना के तत्व के बारे में विचार विमर्श करेंगे और साथ में आपकी कलीसिया के लिए किस प्रकार एक नीतियुक्त योजना तैयार या विकसित की जाए इस विषय पर भी गौर करेंगे।

1. नीतियुक्त योजना क्या है?

    - एक दर्शन की प्राप्ति के लिए कार्यक्रम तथा लक्ष्य को संगठित करने की कला को नीतियुक्त योजना कहते है।

    - नीतियुक्त योजना आप से कहेगी कि आप किस प्रकार के संसाधन का प्रयोग करने जा रहे हैं, और उसे कब प्रयोग करने जा रहे हैं और किस प्रकार उसे लागू करने जा रहे हैं।

2. एक कलीसिया में नीतियुक्त योजना की आवश्यकता क्यों है?

    - भविष्य की दिशा के प्रति एक मानचित्र बनाने के लिए

        - भविष्यात्मक विकास और बढौतरी के लिए एक नींव का निर्माण करने के लिए

          ''जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो? जो कोई मेरे पास आता है, और मेरी बातें सुनकर उन्हें मानता है, मैं तुम्हें बताता हूं कि वह किस के समान है? वह उस मनुष्य के समान है, जिस ने घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चट्टान की नेव डाली, और जब बाढ़ आई तो धारा उस घर पर लगी, परन्तु उसे हिला न सकी; क्योंकि वह पक्का बना था। परन्तु जो सुनकर नहीं मानता, वह उस मनुष्य के समान है, जिस ने मिट्टी पर बिना नेव का घर बनाया। जब उस पर धारा लगी, तो वह तुरन्त गिर पड़ा, और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।।'' लूका. 6:46—49

        - कलीसिया की कई सेवकाई तथा कार्यक्रमों का मार्गदर्शन करने के लिए

- ध्यान भंग करनेवाली बातों को टालने के लिए
    - मिशन और दर्शन में केन्द्रित रहने में सहायता करने के लिए

      ''इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमको घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें।'' इब्रा. 12:1
    - दिशा से भटक जाने से रोकने के लिए
- उसके संसाधनों को प्रभावशालीरूप से और कौशलता से उपयोग करने के लिए
    - कौशलता से संसाधनों को फैलाने के लिए काबिल बनाना
    - उपलब्ध संसाधनों में से अधिकतम नतीजा निकालने के लिए
- भविष्यात्मक संघर्षों को रोकने के लिए
    - उपलब्ध संसाधनों के बारे में संघर्षों को टालना
    - संघर्ष पैदा करनेवाले लक्ष्यों को छोड़ देना

3. नीतियुक्त योजना में क्या क्या शामिल है?

एक नीतियुक्त योजना में सात तत्व हैं। वे निम्नलिखित हैं :

1. दर्शन का कथन
    - आप जिस बात को प्राप्त करने के लिए प्रयास करने जा रहे हैं उसका विवरण
    - आपका निर्णायक *लक्ष्य* क्या है?
2. आवश्यकताओं का कथन
    - दर्शन प्राप्ति के लिए आप को जिन बातों की आवश्यकता है उसकी परिभाषा करें
    - आप को *क्या* चाहिए उस पर केन्द्रित करें न कि उसे किस प्रकार प्राप्त किया जाए
3. क्रियाकलाप पद्धति
    - प्रत्येक आवश्यकताओं के लिए लागू करनेवाले क्रियाकलाप को पहचानिए
        - सूची बनाएं कि प्रत्येक आवश्यकता *किस प्रकार* पूरी की जाएगी
        - <u>सुनिश्चितरूप</u> से आप क्या करने जा रहे हैं
    - निर्धारित करें कि किस क्रियाकलाप को दूसरों के बदले में प्राथमिकता है
    - क्रियाकलाप या परियोजना को उसके पूरे करने के क्रम के अनुसार के क्रम को निर्धारित करें
        - कुछ क्रियाकलाप को दूसरों से पहले आना चाहिए

    - कुछ क्रियाकलाप आपकी सेवकाई के लिए महत्वपूर्ण होंगे

4. समय

- इस बात को सुनिश्चित करें कि आप कब एक क्रियाकलाप करने जा रहे हैं
- इस बात को पहचानें कि उस क्रियाकलाप के लिए कितना समय लगेगा
- उस क्रियाकलाप को पूरा होने के समय को पहचानें

5. संसाधन

- कौन–से मौजूदा संसाधनों की आवश्यकता है?
    - इस बात को सुनिश्चित करें कि लोगों को कार्य करने के लिए किन बातों की आवश्यकता है
    - जिस उपकरण की आवश्यकता है उसे पहचानें
    - निर्धारित करें कि कौन–से आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता है
- कौन–से नए संसाधनों की आवश्यकता है?
    - सुविधाएं
    - उपकरण
    - लोग
- कौन–से प्रशिक्षण की आवश्यकता है?
    - सेवकाई की अगुवाई करने का प्रशिक्षण
    - सेवकाई करने का प्रशिक्षण

6. रणनीति

- आपके पास के विशेष अवसरों को पहचानें
- निर्धारित करें कि आपके सदस्यों के वरदानों को किस प्रकार काम में लाया जाए
- निर्धारित करें कि आपके पास के संसाधनों का फायदा किस प्रकार उठाया जाए

7. संगठन

- निर्धारित करें कि किसके पास कौन–सा अधिकार होगा
    - परियोजनाओं के निर्णय के लिए
    - आर्थिक निर्णय के लिए
- निर्धारित करें कि कौन जिम्मेवार होगा
    - परियोजनाओं के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए

        - हर एक कार्य को पूरा करने के लिए
    - निर्धारित करें कि कौन–से दल की आवश्यकता है और उनके अगुवे कौन होंगे

4. एक नीतियुक्त योजना को हम किस प्रकार विकसित करें?

एक नीतियुक्त योजना को विकसित करते समय प्रयोग करने योग्य कुछ बुनियादी चरण निम्नलिखित हैं :

1. एक नीतियुक्त योजना झुण्ड का संगठन करे
    - कुछ कुंजी लोगों का चयन करे
    - जिसके पास सही कौशल या पृष्ठभूमि है वैसों को चुनें
    - उन में परियोजना के प्रति जोश भरें

2. आपकी योजना की रूपरेखा बनाएं
    - सामान्य रूपरेखा से आरम्भ करें
    - आपके दर्शन तथा कुंजी आवश्यकताओं की परिभाषा दें

3. आपकी योजना में विवरण जोड़ें
    - प्रत्येक आवश्यकताओं के प्रति कार्य में लानेवाली गतिविधियों की सूची को निर्धारित करें
    - हर एक गतिविधियों के तत्व के बारे में विवरणात्मक रूप से चर्चा करें
        - समय
        - संसाधन
        - तरीका
        - संगठन
  - दल की तरफ से मिलनेवाले सुझाव या विचारों पर ध्यान दें
  - योजना को विकसित होने दें

4. कलीसिया के दूसरे लोगों से निवेश को प्राप्त करें
    - योजना को विकसित करने या नए विचारो को पेश करने के लिए
    - सहायात्मक दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए
    - एक जगह पर अटके रहने से बचने के लिए

5. एक लिखित कागजात को तैयार करें

- एक योजना को लिख डालना स्पष्टता के लिए सहायतमन्द है
- इस विषय पर टिप्पणी के लिए इसे दूसरों तक वितरित कर सकते हैं
- यह चर्चा और निर्देश के लिए एक नींव तैयार करता है
- यह योजना प्रक्रिया की तरफ से मिलनेवाला साकारत्मक नतीजा है

6. योजना को अन्तिम रूप देना

- अन्तिम लिखित नीतियुक्त योजना को तैयार करें
- आपके दल के सदस्यों को उसपर पुनःविचार करने दो
- योजना दल के प्रत्येक व्यक्ति को उसमें हस्ताक्षार करने दो
    - अपने सहमति को जताने के लिए
    - भविष्य संघर्ष को टालने के लिए

नीतियुक्त योजना – अभ्यास

दर्शन का कथन ....
....
....

लक्ष्य 1: ....

क्रियाकलाप :

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

लक्ष्य 2: ....

क्रियाकलाप :

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

लक्ष्य 3: ....

क्रियाकलाप :

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

लक्ष्य 4: ....

क्रियाकलाप :

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

अध्याय 10

धन का प्रबन्धकदल

"तुम परमेश्वर और धन दोनो की सेवा नहीं कर सकते"।

मत्ती. 6:24

वास्तव में प्रत्येक सेवकाई चलन के लिए धन की आवश्यकता है। विशेषरूप से वे उन्हें मिलनेवाले धन और उपहार पर निर्भर रहता है। कलीसिया का एक अगुवा होने के नाते यह आपकी जिम्मेवारी है कि प्राप्त होनेवाले हर उपहार तथा धन का सही लेखा हो और सेवकाई के लिए उपयोग होनेवाली लागत का भी लेखा–जोखा सही से हो। यह विशिष्टरूप से कानूनी तौर पर आवश्यक है और साथ में इससे बढ़कर वैसे करने के लिए बाइबल हमें आदेश देती है! आपकी कलीसिया या सेवकाई की लागत का सही प्रबन्धकदल परमेश्वर और सदस्यों के बीच में इस बात को प्रदर्शित करता है कि आप विश्वासयोग्य हैं। बाइबल हमें चेतावनी देती है कि यदि हम हमारे धन के मामले में विश्वासयोग्य रहने में असफल बन जाते हैं तो वह हमें विनाश और दुःख की ओर ले जाता है। इस अध्याय में हम देखेंगे कि धन का प्रबन्धकदल इतना महत्वपूर्ण क्यों है, और इसके सिद्धान्त कौन–कौनसे हैं, धन के प्रति विश्वासयोग्य कैसे रहें और उससे क्या फायदा मिलता है।

1. धन का सही प्रबन्धकदल क्यों महत्वपूर्ण है?

    1. बाइबल कहती है धन कई परेशानियों को उत्पन्न कर सकता है

        ''क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है'' 1तिमु. 6:10

        - धन का खराब प्रबन्धकदल तनाव और परेशानियों की ओर ले जाता है
            - अन्य पाप (झूठ बोलना, चोरी करना, लालच करना, जुआबाज़ी, आदि)

                ''धर्म खरी चाल चलनेवालों की रक्षा करता है, परन्तु पापी अपनी दुष्टता के कारण उलट जाता है।'' नीति. 13:6
            - यह रिश्तों को नाश कर देते हैं

                ''जो खराई से चलता है वह निडर चलता है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है उसकी चाल प्रगट हो जाती है।'' नीति. 10:9
        - लक्ष्य धन नहीं है, यह लक्ष्य तक पहुँचने का एक साधन है।
            - एक लक्ष्य को पाने के लिए उपयोग करनेवाले संसाधन है धन
            - परमेश्वर का कार्य करने के लिए आवश्यक संसाधनों को परमेश्वर स्वयं मुहैया करते हैं
        - लोगों के जीवन में धन का प्रभाव स्पष्टचित्रित है
            - यह अक्सर गलत निर्णयों पर पहुँचाता है
            - यह कैद में भी पहुँचा सकता है
        - धन आराधना वस्तु या परमेश्वर बन सकता है

        "तुम परमेश्वर और धन दोनो की सेवा नहीं कर सकते"। मत्ती. 6:24

- धन का पीछा करने का तात्पर्य है झूठे ईश्वर का पीछा करना
- धन का गुलाम बनने के द्वारा आप मसीह में अपनी स्वतन्त्रता को खो देंगे

2. अनुपयुक्त रीति से धन का उपयोग करना परमेश्वर को धोखा देना होता है

- कलीसिया में दिए गए भण्डार परमेश्वर के लिए दिए हुए हैं
  - हमारे पास जो कुछ भी है वे सब उन्हीं का है, हम केवल भण्डारी (प्रबन्धक) ही है
  - हमारे भण्डार और उसके साथ क्या करना है इसके बारे में परमेश्वर के पास एक योजना है
- धन का दुरुपयोग चोरी करने के समान है
  - आप कलीसिया से चुराते हैं
  - आप परमेश्वर से चुराते हैं (मलाकी. 3:8)
  - चोरी प्रेम को प्रदर्शित नहीं करती है

    ''प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता,'' रोमि. 13:10

3. धन का घटिया प्रबन्ध घटिया भण्डारीपन है

- धन को (परमेश्वर के संसाधन) बुद्धिमानी से प्रबन्ध नहीं करने को घटिया भण्डारीपन कहते है
  - परमेश्वर की ओर से दिए गए तोहफे का सदुपयोग परमेश्वर के राज्य के लिए फल उत्पन्न करता है
  - सही से परमेश्वर के तोहफे का प्रबन्ध परमेश्वर की महिमा करता है

4. धन की सही प्रबन्ध भरोसे का निर्माण करता है

- यदि आप धन को संभाल नहीं सकते हैं तो आपकी आत्मिक बातों को भी आप नहीं संभाल सकते

  ''इसलिये जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा तुम्हें कौन सौंपेगा।'' लूका. 16:11

- यदि आप परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं तौभी लोग आप पर भरोसा रखेंगे

  ''जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है: और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है।'' लूका. 16:10

2. धन के सही प्रबन्धकदल की सिद्धान्त कौन–कौन–से हैं?

''जो तुम्हारे लिये ठहराया गया है, उस से अधिक न लेना। किसी पर उपद्रव न करना, और न झूठा दोष लगाना, और अपनी मजदूरी पर सन्तोष करना।।'' लूका. 3:13–14

1. परमेश्वर जो देते हैं उसमें सन्तुष्ट रहना

- केवल आपकी आवश्यकताओं के लिए उनसे माँगे
- आपकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखें

2. धन जिस कार्य के लिए नियुक्त नहीं है उस कार्य के लिए उसे खर्च न करें
    - एक कार्य के लिए पैसे माँगने के बाद उसे किसी ओर काम के लिए उपयोग नहीं करना
    - लोग जिस बात के लिए दिया है उसका सम्मान करें

3. कलीसिया के धन को अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए उपयोग में न लाए
    - कभी भी अपनी व्यक्तिगत इच्छा तथा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कलीसिया से धन न निकालें
    - किसी अन्य व्यक्ति की आवश्यकता पूरा करने हेतु कलीसिया के धन का प्रयोग न करें

4. प्राप्त धनराशी का लेखा–जोखा
    - प्राप्त हर एक आमदनी और तोहफे का उल्लेख करें
    - जिस उद्येश्य के लिए धन इकट्ठा किया गया है उसे उल्लेखित करें तथा सम्मान करें
    - ताज़ा तथा सही जानकारी रखें

5. खर्चीत धनराशी का लेखा–जोखा
    - हर एक खर्च को उल्लेखित करें
    - हर एक खर्च की रसीद रखें

6. बड़े पैमाने की खरीदारी के लिए क्रियाविधि बनाएं
    - बड़े पैमाने की खरीदारी के लिए किसी एक व्यक्ति को अनुमति न दें
    - हर एक बडे खर्च तथा बकाया की जाँच हेतु तरीका बनाएं
    - धन के विमोचन के लिए मंजूरी या किसी प्रमाण पत्र की माँग करें

7. नियमितरूप से आर्थिक विवरण का प्रकाशन करें

- प्राप्त धनराशी
- व्यय धनराशी
- बकाया

8. कलीसिया के आय–व्यय की जाँच के लिए किसी निर्दलीय व्यक्ति का उपयोग करें
   - आर्थिक उल्लेखितों की जाँच के लिए कलीसिया के बाहर से किसी व्यक्ति को उपयोग किया जाए
   - वार्षिक लेखापरीक्षा करें

3. आप किस प्रकार के धन के सही प्रबन्धकदल को काम में लाएंगे?

1. दशमांश के बारे में बाइबलीय आदेश को सिखाएं

   ''बीज की सारी उपज में से जो प्रतिवर्ष खेत में उपजे उसका दशमांश अवश्य अलग करके रखना।'' व्यवस्था. 14:22

   - नमूना बनें – दशमांश देनेवाला हो
   - पहला फल देने के लिए प्रोत्साहित करें (नीति. 3:9)

2. आर्थिक ईमानदारी को प्रदर्शित करें
   - हर एक आय–व्यय को उल्लेखित करें
   - आपके कर्ज का भुगतान पहले करें
   - कलीसिया के धन का पुनरावलोकन करने तथा लेखापरीक्षा करने की क्रियाविधि अपनाएं

3. आपकी आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए परमेश्वर पर भरोसा करें
   - आपकी आवश्यकताओं को वह पूरा करेंगे
   - परमेश्वर अपने लोगों की ध्यान रखते हैं

     ''इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे, कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिये सब कुछ बहुतायत से देता है।'' 1तिमु. 6:17

4. कलीसिया के लोगों को कलीसिया के अर्थ पर नज़र डालने के लिए अनुमति दें

- आपके अर्थ को कलीसिया के लोगों से छिपाए न
- हर एक आदान–प्रदान के प्रति खुला तथा विश्वासयोग्य रहें

4.धन के सही प्रबन्धकदल का फायदा क्या है?

1. आपकी कलीसिया के सदस्यों के साथ आपका भरोसा कायम रहता है

- पैसे के मामले में यदि वे आप पर भरोसा रखें, तो बाकी बातों पर भी वे आप पर भरोसा रखेंगे
- आपकी कलीसिया के लोग आप पर भरोसा करना चाहते हैं तत्पश्चात आपका पीछा करना
- बड़े पैमाने में धनराशी संभालने में लोग आप पर भरोसा जताएंगे

2. आप सम्भावित परेशानियों से परे रह सकते हैं

- आपको प्रलोभित करने में शैतान नाकाम रह जाएगा
- लालच के लिए आप में जगह नहीं मिलेगी
- आप पवित्र तथा धर्मी बने रहेंगे और आपकी भेडों के प्रति आप एक अच्छा नमूना बनेंगे

3. आप इस बात को सीखने पाएंगे कि परमेश्वर की सामर्थ आप के लिए क्या कर सकती है

- आप अपनी आँखों से देखने पाएंगे कि परमेश्वर आपकी आवश्यकताओं को किस प्रकार पूरा कर रहे हैं
- आप उनके वायदों पर भरोसा रखने में विकसित कर पाएंगे
- सर्वप्रथम उन्हें खोजना आप सीखेंगे

  ''इसलिये पहिले तुम उसे राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं तुम्हें मिल जाएंगी।'' मत्ती. 6:33

धन का प्रबन्धकदल – अभ्यास

आपके धन के प्रबन्धकदल को सुधारने योग्य बात जो आप आज कर सकते हैं उनकी सूची बनाएं

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....
6. ....
7. ....
8. ....
9. ....
10. ....

अध्याय 11

समय का प्रबन्धकदल

''... और बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है। क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है, ... ''

सभोप. 8:5–6

यह कोई मायने नहीं रखता है कि हमारा पेशा या व्यवसाय क्या है जिसे हम चुनते हैं या हमें अगुवाई करने को मिलता है, हम सब मिले हुए समय के भीतर और प्राप्त संसाधनों के आधार पर उसे पूरा करने के यत्न में लगे हैं। कई संसाधनों को हम मोल लेकर खरीद सकते हैं, परन्तु समय ऐसा एक संसाधन है जिसे हम न तो खरीद सकते है या भरपाई कर सकते हैं। यदि एक बार समय निकल गया तो वह हमेशा के लिए खत्म हो गया है। उस समय का उपयोग दोबारा नहीं कर सकते या उसे फिर से पा सकते हैं। इसलिए समय के मामले में हमें सावधानी बरतना है कि हम किस प्रकार उसका उपयोग कर रहे हैं और किस काम लिए कर रहे हैं। हमें यह भी पता नहीं है कि हमें कितना समय दिया गया है। प्रभु हमें घर की ओर कब बुलाएंगे इस बात को हम न जानने के कारण हमें चाहिए कि हमारे पास दिए गए समय को बुद्धिमानी से उपयोग करें। कई सारी पुस्तक समय के प्रबन्धकदल के बारे में लिखा गया है, और हम चाहते हैं कि आप अपने समय को प्रभावशाली ढंग से उपयोग करने हेतु कुछ सिद्धान्तों का निचोड़ दिया जाएं। इस अध्याय में हम, समय के प्रबन्धकदल का महत्व, समय के प्रबन्धकदल के कुछ सिद्धान्त, समय का प्रबन्धकदल किस प्रकार किया जाए और प्रभावशाली समय के प्रबन्धकदल की दो सामग्री उपलब्ध कराना चाहते हैं।

1. आपके समय के प्रबन्धकदल का महत्व

   1. यह कई सेवकाई के कामों को पूरा करने के लिए सहायता करता है

      - आपने जो काम करने के लिए सोचा है उसे पूरा करने में सहायता करता है
      - सबसे महत्वपूर्ण बातों को पूरा करने हेतु ध्यान रखने में यह आपकी सहायता करता है
      - जो समय आप प्रभावशाली रूप से उपयोग करते हैं उसका नतीज़ा अच्छा निकलता है

   2. यह समय को बरबाद होने से बचाता है

      ''इसलिये ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों की नाई नहीं पर बुद्धिमानों की नाई चलो और अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं।'' इफि. 5:15–16

      - आप अप्राथमिक कार्यों को करने के लिए अधिक समय का उपयोग नहीं करेंगे
      - आप लाभ न देनेवाले समय के बारे में सावधान रहेंगे
      - आगे क्या करना है सोचकर अपने समय को आप नहीं गवाएंगे

   3. यह आपको महत्वपूर्ण समयसीमा और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सक्षम बनाएगा

- यह आपको समय सरणी और समयसीमा के बारे में ज्ञात कराएगा ताकि आप उससे वंचित न रहें
- लक्ष्य के प्रति सटीक प्रगति के लिए सक्षम बनाता है
- यह आप की क्रियाविधियों को संगठित करने तथा प्राथमिकता के अनुसार विभिन्न तालिकाओं में लाता है।

4. यह काम के तनाव को कम करने में सहायता करता है

- कुछ महत्वपूर्ण बात को खोने के प्रति होनेवाली चिंताओं को कम करता है
- आपकी क्रियाविधि तथा समयसारणी में नियन्त्रण रखता है
- यह आप को आराम और अवकाश का समय प्रदान करता है
- परमेश्वर को कार्य करने का अवसर दें!

  ''यहोवा के साम्हने चुपचाप रह, और धीरज से उसका आसरा रख;'' भजन. 37:7

  '' चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर हूँ।'' भजन. 46:10

5. आपकी आवश्यकता के अनुसार आप को समय मिलता है

- यह कम अवधि की संकटावस्था को निपटाने में आपको सक्षम बनाता है
- समय के भीतर प्राथमिक बातों को निपटाने के विषय में यह सुरक्षा प्रदान करता है

2. समय के प्रबन्धकदल का सिद्धान्त

''उन बातों को सोचता रह, ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो। अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख।'' तिमु. 4:15

1. अपने क्रियाकलाप को प्राथमिकता क्रम में रखें

   - उसके महत्व के अनुसार
   - उस कार्य करने की आवश्यकताओं के अनुसार
   - आपकी वचनबद्धता के अनुसार

2. विशेष लक्ष्यों को बनाए

   - जब एक कार्य को पूरा करने का है

- एक क्रियाकलाप के लिए कितने समय को देना है
- उस क्रियाकलाप को किसे करना चाहिए

3. एक जैसे क्रियाकलाप को एक झुण्ड में करें

- क्षमता बढ़ाने के लिए क्रियाकलापों को झुण्ड में एकत्रित करें
  - दूरभाष तथा पत्राचार
  - सलाह सत्र
  - प्रचार तथा शिक्षा की तैयारी
  - सभाएं
- एक प्रकार के क्रियाकलाप से दूसरे की ओर एकदम न खूदें
  - आप ध्यान को खोने में अग्रसित हो सकते हैं
  - जो आपने किया है उसे भूल सकते हैं
- परिवर्तन– क्रियाविधि में आपका कम समय बरबाद होगा
  - जब आप एक क्रियाकलाप से दूसरे की ओर जाते हैं तब आपका काफी समय बरबाद हो जाता है
  - जब आप एक बार आरम्भ कर लेते हैं तब उसी में आगे बढ़ने में आसान रहता है

4. आपके निर्णय को प्रतिदिन संगठित करें

- जिन निर्णयों को बाद में ले सकते हैं उसे लेने में *विलम्ब* करें
- निर्णय लेने में काबिल लोगों को वह कार्य *सौंपे*
- आपके निर्णय की आवश्यकता जिन मामलों में है उसे *निर्धारित* करें

5. आपके प्रतिदिन की समयसारणी को लचकीला बनाएं

- प्रत्येक मिनट व्यस्त रहनेवाले एक तंग समयसारणी न बनाएं
- आपकी समयसारणी को प्रभावित करनेवाले अप्रत्याशित बातों की प्रत्याश करें
- अन्तराल तथा भोजन के लिए समय निर्धारित करें
- आपकी समयसारणी और प्राथमिकताओं को बदलने के लिए परमेश्वर को अवसर दें
  - एक नई सेवकाई के अवसर के द्वारा
  - एक नए दृष्टिकोण के द्वारा

6. बाधाओं को तुरन्त निपटाएं

- जो बाधाओं के समाधान बाद में दे सकते हैं उसका समाधान बाद में ही निकालें
- पहले समस्या को सुने और निर्धारित करें कि विलम्ब करना, सौंपना या निर्णय लेना
- यदि आप निर्णय तुरन्त ले सकते हैं तो वैसा करें, और उसके बाद आगे बढ़ते जाएं

3. आपके समय का प्रबन्धकदल कैसे करें?

1. आपके दिन को संगठित करें

- जो काम करने का है उसकी सूची बनाएं
  - उस कार्य को पहचानिए जिसे आज ही पूरा करना है
  - उस कार्य को पहचानिए जिस पर आज ही कार्य करना है
  - उस कार्य को पहचानिए जिसपर आज ही निर्णय लेने का है
  - उस कार्य को पहचानिए यदि समय की उपलब्धता है तो आज ओर कौन–सा कार्य आप करना चाहते है
- सही से संस्थापित लक्ष्य और प्राथमिकताएं हो
  - सबसे महत्वपूर्ण बात को जानें
  - आप जिस लक्ष्य की ओर काम कर रहे हैं उसे जानें
  - सबसे महत्वपूर्ण बातों को पहले करें
- लघु–अन्तराल की योजना बनाएं – आपके शरीर और मन को आराम की आवश्यकता है
- आपके सबसे उत्पादनकारी समय को निर्धारित करें और सबसे महत्वपूर्ण कार्य को करें और
  - जब दिन के अन्त में जबकी आप थके हुए हैं तब कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लें
  - कम प्राथमिकता के कार्यो को कम ऊर्जा के समय में करें (जैसे की दोपहर के भोजन के बाद)

2. कार्यकुशल रहें

- सारे फ़ोन एक साथ करें
- प्रचार की तैयारी तथा अध्ययन के लिए कुछ बाधारहित समय आपके पास हो

- अनावश्यक मामलों में दख्ल–अन्दाज़ी और संघर्षों से बचें
- आज जिस कार्य को *करने का है* केवल उसे ही करें

3. दूसरे लोग जो काम कर सकते हैं उसमें अपना समय न गवाएं

    - यदि सम्भव है तो दूसरे अगुवों को जिम्मेवारी सौंपे
    - दूसरों को जो काम करने का है उसे करने न जाए जब तक कि उतनी आवश्यकता पैदा नहीं होती
        - ऐसी एक पुरानी कहावत है – किसी की मदद करें तो वह आपका काम बन जाता है (अर्थात् दूसरों की मदद के लिए आपके द्वारा किया जानेवाला छोटा–सा काम आपके प्रतिदिन की आदत या वचनबद्धता बन जाती है जिसे रोकना असंभव बन जाता है)

4. प्रभावशाली सभाओं का प्रबन्धकदल करें

    - आपके मार्गदर्शन के लिए एक प्रार्थना को सम्मिलित करें
    - हमेशा एक कार्यसूची बनाएं
        - जो कार्यसूची मे नहीं है ऐसी बातों पर चर्चा करने से बचें
            - क्योंकि लोगों ने ऐसे मामलों पर चर्चा करने के लिए तैयारी नहीं की है
            - क्योंकि साधारणरीति से यह चर्चा मुद्दे के आधीन नहीं होती है
        - समयसीमा तथा कार्यसूची में बने रहें
    - जिन बातों का निर्णय लेने का है उन प्रस्ताव तथा सिफारिश पर चर्चा करें
        - यदि आप निवेश को प्राप्त करना नहीं चाहते हैं तो किसी भी मुद्दे पर चर्चा न करें
        - यह सभा को प्रमुख बातों पर सटीक रहने में सहायता करता है
        - चर्चा निर्णय लेने की ओर ले जाता है
    - नियतकार्य दें
        - दलीयकार्य और प्रक्रिया में स्वामीपन को उत्पन्न करता है
        - सभा में उपस्थित लोगों को जवाबदेह बनाता है
    - चर्चा, निर्णय और सहमति को सभा के मिनिट्स के द्वारा उल्लेखित किया जाए
        - जिस बात पर चर्चा हुई उसे उल्लेखित करें
        - जिस बात पर निर्णय लिया गया उसे उल्लेखित करें
        - लोगों ने जिन नियतकार्यों में सहमति जताई है उसे उल्लेखित करें

4.प्रभावशाली समय प्रबन्धकदल की दो सामग्री

1. एक समय–तालिका बनाएं (या दैनिक या मासिक पंचांग का उपयोग करें)

    - एक सप्ताह या नियमित कार्यों के बीच में आपके समय को पता लगाने के लिए इसे उपयोग करें

        - यह आपके समय के विशलेषण करने में सहायता करता है कि आपने अपने समय को कहाँ व्यतित किया।

        - आपकी सप्ताहिक कार्यप्रणाली को बनाने में यह आपकी सहायता करता है

2. करनेवाले कार्यों की एक सूची बनाएं

    - आपके दिन, सप्ताह और महीने को संगठित करने में यह आपकी सहायता करेगी

    - पहले महत्वपूर्ण सेवकाई के कार्य को करने में आपके पास उपलब्ध होगी

    - महत्वपूर्ण कार्यक्रम तथा वचनबद्धता को भूल जाने से बचाता है

आपके समय प्रबन्धकदल – अभ्यास

आनेवाले सप्ताह में छुट्टी के दिन, बाइबल अध्ययन के दिन, प्रचार की तैयारी सप्ताहिक आराधना के दिन को सूचित करने के लिए निम्नलिखित सप्ताहिक समय योजनाकार का उपयोग करें। बाकि समय को आवश्यकताओं के अनुसार भरने के लिए आप सक्षम होंगे।

	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
08.00							
08.30							
09.00							
09.30							
10.00							
10.30							
11.00							
11.30							
12.00							
12.30							
01.00							
01.30							

02.00							
02.30							
03.00							
03.30							
04.00							
04.30							
05.00							
05.30							
06.00							
06.30							
07.00							
07.30							
08.00							
08.30							
09.00							
09.30							

आपके समय के प्रबन्धकदल का नमूना

	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
08.00		फोन करना		बाइबल अध्ययन		परिवार	
08.30		फोन करना		बाइबल अध्ययन	सलाह	परिवार	
09.00		दफ्तर		बाइबल अध्ययन	सलाह	परिवार	आराधना
09.30		दफ्तर		बाइबल अध्ययन	सलाह	परिवार	आराधना
10.00		दफ्तर			सलाह	परिवार	आराधना
10.30		दफ्तर					आराधना
11.00							आराधना

11.30							आराधना
12.00	दोपहर का भोजन	दोपहर का भोजन	दोपहर का भोजन	दोपहर का भोजन	दोपहर का भोजन		दोपहर का भोजन
12.30	दोपहर का भोजन	दोपहर का भोजन	दोपहर का भोजन	दोपहर का भोजन	दोपहर का भोजन		दोपहर का भोजन
01.00				मिलने की क्रिया			
01.30				मिलने की क्रिया			
02.00			प्रचार की तैयारी	मिलने की क्रिया			
02.30			प्रचार की तैयारी	मिलने की क्रिया			
03.00			प्रचार की तैयारी				
03.30			प्रचार की तैयारी				
04.00							
04.30							
05.00	रात का भोजन	रात का भोजन	रात का भोजन	रात का भोजन	रात का भोजन		
05.30	रात का भोजन	रात का भोजन	रात का भोजन	रात का भोजन	रात का भोजन		
06.00							
06.30							
07.00		सभा				रविवार की तैयारी	
07.30		सभा				रविवार की तैयारी	
08.00		सभा				रविवार की तैयारी	
08.30						रविवार की तैयारी	
09.00							
09.30							

अध्याय 12

सूचना का प्रबन्धकदल

''बुद्धिमान लोग ज्ञान को रख छोड़ते हैं''

नीति. 10:14

कलीसिया के द्वारा सबसे अधिक उपेक्षा किया गया संसाधन है सूचना। यह सूचना कलीसिया के सदस्यों के बारे में, या सेवकाई और क्रियाकलापों के बारे में या उपलब्ध संसाधनों के बारे में हो सकता है। हमें जिस सेवकाई के लिए बुलाया गया है उस सेवकाई को करने में हमारी सहायता करनेवाली सूचनाओं का भण्डार काफी है और यह जानना आवश्य है कि ये सूचनाएं कहाँ है और उसे कैसे प्राप्त की जाएं। कुछ सूचनाओं को कलीसिया स्वयं एकत्रित कर सकती है, विशेषरूप से अपने सदस्यों के क्रियाकलाप तथा वरदानों के बारे में। बाकि सूचनाएं अब पुस्तकालय, तथा इन्टेरनेट में उपलब्ध है। समय के अनुसार सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए पहले तैयार जानकारी होना आवश्यक है या फिर ये कहाँ से मिलेगी इसके बारे में जानकारी होना आवश्यक है। इस प्रक्रिया को सूचना का प्रबन्धकदल कहा जाता है। इसके लिए कमप्यूटर एक निपुण उपकरण है, परन्तु सूचनाओं को एकत्रित करने के लिए कमप्यूटर की आवश्यकता नहीं है। आप ओर कोई प्रभावशाली तरीका अपना सकते हैं। इस अध्याय में हम, सूचना के प्रबन्धकदल का महत्व, सूचना के प्रबन्धकदल का सिद्धान्त, और भविष्य की सेवकाई के लिए किस प्रकार सूचना को एकत्रित करें, के बारे में देखेंगे।

1. सूचना के प्रबन्धकदल का महत्व

   ''सब चतुर तो ज्ञान से काम करते हैं''

   नीति. 13:16

   1. आपके पास के संसाधनो के बारे में आपकी जानकारी को यह बढ़ाता है

      - आपके सदस्यों के आत्मिकवरदान और निपुणता के बारे में सूचना
      - आपकी कलीसिया के अन्य संसाधनों की जानकारी (पुस्तकें, चलचित्र, बाइबल अध्ययन, आदि)
      - कलीसिया के क्रियाकलाप तथा सेवकाई के बारे में सूचना (कौन, क्या और कहाँ)

   2. यह सूचनाओं को ढूंढ़ने में खर्च करनेवाले समय की बरबादी से बचाता है

      - प्रलेख के लिए आप काफी सारा समय का दुरुपयोग नहीं करेगा
      - विशेष आवश्यकताओं के लिए किसके पास जाना है इस बात को आप जानते हैं
      - आपकी ओर से खोजनेवाली सूचना को पाने के लिए आप को लोगों के साथ सम्पर्क में बने रहने की आवश्यकता नहीं

3. यह आपको बेहतर निर्णयों को लेने में सहायता करता है

- जब निर्णय सूचनाओं पर आधारित होता है तब वह सूचनाओं के जितनी अच्छी होती है
- जब आवश्यकता है तब सूचना उपलब्ध होना महत्वपूर्ण है
- अनुमान लगाने से अच्छा है हमेशा जानकारी अपने पास होना

4. अच्छी योजनाओं के लिए यह अनिवार्य है

- जब योजना सूचनाओं पर आधारित होती है तब वह सूचनाओं के जितनी अच्छी होती है
- कमज़ोर सूचना कमज़ोर नतीज़े की ओर ले जाती है
- आपको जिस बात की जानकारी नहीं है उसके विषय में योजना नहीं बना सकते हैं

5. यह आपको सेवकाई के अवसरों को देखने में सामर्थी बनाता है

- जो आप जानते हैं उसकी उपलब्धता आप को रचनात्मक बनाती है
- यह आपको सेवकाई के सम्भावनों पर बने रहने में सामर्थ प्रदान करता है
    - सदस्यों के वरदान और जोश पर आधारित
    - आपके समाज की आवश्यकताओं पर आधारित

2. सूचना के प्रबन्धकदल का सिद्धान्त

''बुद्धिमानों की संगति कर, तब तू भी बुद्धिमान हो जाएगा,''

नीति. 13:20

1. आपको जिस बात की आवश्यकता है केवल उसकी ही सूचना को एकत्रित करें

- निर्णय लेने के लिए उपयुक्त सूचना
- कलीसिया के संचालन के लिए उपयुक्त सूचना
- सदस्य कलीसिया में अपनी भूमिका के बारे में समझने के लिए मद्दगार सूचना

2. नियमित रूप से सूचनाओं को आधुनिक बनाते रहें

- सूचनाओं की उम्र जल्दी बढ़ती है और कई बार पुरानी हो जाती है

- सूचनाओं को कैद करने के लिए प्रक्रियाओं को विकसित करें
    - कक्षा हाजिरी का पन्ना
    - नए सदस्य का सूचनापत्र
- सूचनाओं को एकत्रित करने के लिए कलीसिया के अगुवों को काम में लाएं
    - सेवकाई के सहभागी लोग
    - सेवकाई के नतीजे, और क्रियाकलाप
- कलीसिया के सदस्यों के लिए एक वार्षिक आधुनिकतापत्र का उपयोग करें
    - पते में बदलाव
    - नए दूरभाष संख्या और ईमेल पता

3. व्यक्तिगत सूचनाओं को सुरक्षित रखें
    - जब तक सदस्य की सहमति न हो तब तक उनकी व्यक्तिगत सूचनाओं को न छापें और न प्रकाशन करें
    - उसे बन्द कमरे में रखें
    - गोपनीयता बरकरार रखें

4. आसानी से सूचना को हासिल करने के तरके से उसे संभालकर रखें
    - प्रकार के अनुसार (शीर्षक, उद्येश्य, उपयोग आदि.)
    - सेवकाई के अनुसार
    - सदस्यों के नाम के अनुसार

5. सूचनाओं के उपयोग के लिए एक योजना हो
    - उपयोग करने की एक योजना के बगेर सूचनाओं को एकत्रित न करें
    - प्रत्येक प्रकार की सूचनाओं को एकत्रित करने के उद्येश्य को जानें
    - यदि आप को उसकी आवश्यकता नहीं है तो उसे एकत्रित न करें

6. सूचना का प्रबन्धकदल करें
    - इसे एकत्रित किया या संचित किया करके कल्पना न करें
    - इसे आधुनिक बनाते जाएं
    - नियमितरूप से आंकडे का पुनरावलोकन करते रहें

3. सूचना का प्रबन्धकदल कैसे करें

1. आपको जिन सूचनाओं की आवश्यकता या चाहत है उसे निर्धारित करें
    - कलीसिया के सदस्य
    - कलीसिया के क्रियाकलाप
    - कलीसिया के संसाधन (पुस्तकें, कमरे और समाग्रियाँ, आदि)
    - सामाजिक संसाधन (होटल, सम्मेलन की जगह, स्थानीय वितरक, आदि)

2. कलीसिया के सदस्यों की सूचना को एकत्रित करें तथा संचित करें
    - उनके नाम, पता और सम्पर्क सूचना (फोन, ईमेल)
    - उनके आत्मिक वरदान
    - उनकी निपुणता और तर्जुबा
    - उनकी कलीसियाई क्रियाकलाप तथा सम्पर्क

3. कलीसिया के क्रियाकलाप के बारे में सूचना एकत्रित तथा संचित करें
    - आराधना में उपस्थिति
    - बाइबल कक्षा में उपस्थिति
    - छोटे झुण्ड में उपस्थिति

4. विशेष सूचनाओं की पतालगाने तथा संगठित करने की एक विधि को विकसित करें
    - सूचना को कहाँ संचित किया है (कमप्यूटर में या पपेर में)
    - उपयोगी इन्टैरनेट साईट्स
    - सूचना किस के पास है

5. सूचना को उपयोग करने के लिए एक योजना विकसित करें
    - किस प्रकार की सूचनाओं को एकत्रित करना है
    - प्रत्येक प्रकार की सूचनाओं का क्या उद्येश्य है

- सूचनाओं को एकत्रित करने का जिम्मा किसका है

6. सूचना की प्रबन्धकदल के लिए किसी को नियुक्त करें
    - सूचनाओं को एकत्रित करना जारी रहनेवाला कार्य है
    - हर एक सूचना के एक केन्द्रिय संसाधन का प्रावधान करें
    - सही योजना और रखरखाव अधिकार

सूचना की प्रबन्धकदल – अभ्यास

आपके कलीसिया या सेवकाई के लिए एक सूचना योजना को विकसित करने के लिए नीचे दी गई बातों का उपयोग करें

सूचना जिसे एकत्रित करना है	उद्येश्य	कौन एकत्रित करेगा	कैसे एकत्रित करेगा